वेदों की ओर लौटो।

॥ ओ३म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २३ अंक ७,८ - जुलाई, अगस्त २०२३

महाराष्ट्र सभा के कार्यकारी प्रधान

स्मृतिशेष श्री माधवरावजी देशपाण्डे

- सविनय श्रद्धांजलि...! -

महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा द्वारा आयोजित,

श्रावणी वेदप्रचार के लिए आमन्त्रित प्रचारक

पं.शिवकुमारजी शास्त्री
(सहारनपुर-उ.प्र.)

पं.यशवीरजी शास्त्री
(नई दिल्ली)

आचार्य पं.सानन्दजी
(पानीपत-हरियाणा)

पं.विवेकजी दीक्षित
(फरिदाबाद-हरियाणा)

पं.ज्ञानप्रकाशजी शास्त्री
(बलिया-उ.प्र.)

पं.राजवीरजी शास्त्री
(सोलापुर-महाराष्ट्र)

पं.अमरेशजी शास्त्री
(देवबन्द-उ.प्र.)

पं.प्रदीपजी शास्त्री
(फरिदाबाद-हरियाणा)

पं.अजयजी आर्य
(मेरठ-उ.प्र.)

पं.नेत्रपालजी आर्य
(बरेली-उ.प्र.)

पं.विष्णुजी आर्य
(मथुरा-उ.प्र.)

पं.प्रतापसिंहजी चौहान
(उदगीर-महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ अधिक श्रावण/निज श्रावण १० अगस्त २०२३

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई–मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४

२) मानवता का निर्वस्त्रीकरण! (सम्पादकीयम्)............ ०५

३) श्रावणी का अर्थ एवं महत्त्व ०७

४) माधवराव देशपाण्डे अनन्त की ओर! १२

५) राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम............ १५

६) समाचार दर्पण २२

७) शोकसमाचार २५

मराठी विभाग

१) मनू उपदेश/दयानंद वाणी २९

२) वेदवाङ्मयातील काव्यशास्त्रीय तत्त्वे ३०

३) महाराष्ट्राच्या समाजसुधारणेत आर्य समाज ३३

४) वर्षाकालीन ऋतुचर्या ३६

५) वार्ताविशेष ३७

✻ प्रकाशक ✻

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज,
परली–वैजनाथ–४३१५१५

✻ मुद्रक ✻

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली–वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

वेदाध्ययन का फल

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।

(सामवेद ५/२/८/१)

पदार्थान्वय– (**यः**) जो (**पावमानीः**) पवित्र करनेवाली वेद–ऋचाओं को (**अध्येति**) विचारता है, स्मरण करता है, (**सः**) वह (**ऋषिभिः**) ऋषियों के द्वारा (**संभृतम्**) भले प्रकार धारण किये हुए (**सर्वम्**) सारे (**पूतम्**) पवित्र (**रसम्**) रस को (**अश्नाति**) खाता है, भोगता है।

भावार्थ – वेदविचार से मनुष्य के अन्दर वह सामर्थ्य आ जाता है कि वह ऋषियों और ब्रह्मनिष्ठों की श्रेणी में आ जाता है। संसार के विषयों में रस है अवश्य, किन्तु वह मलिन है, उससे आत्मा और अन्तःकरण मलिन और शरीर भी शीर्ण होता है, किन्तु ब्रह्मामृत रस अत्यन्त पवित्र है, उसके सेवन से आत्मिक, मानसिक, शारीरिक तृप्ति के साथ शुद्धि भी होती है।

(स्वामी वेदानंद तीर्थ विरचित 'स्वाध्याय सुमन'(द्वितीय प्रकाश)

।।ओ३म्।।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि। (अथर्व–१/१/४)

(हम वेद के मार्ग पर चलते रहे, इसके विरुद्ध आचरण न करे।)

– हम सभी के प्रेरणादायी वैदिक एवं राष्ट्रीय पर्व –

श्रावणी वेदप्रचार उपाकर्म पर्व,
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस एवं
योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर

आप सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं!

हमारा जीवन सदैव वेदानुसार हो। हमारे हृदय में देशभक्ति की भावनाएं बहती रहे। युगपुरुष श्रीकृष्ण का पावन जीवन हमारी प्रेरणा बनें...।

सम्पादकीयम्...

मानवता का निर्वस्त्रीकरण!

आभूषणों की भूमि कहे जाने वाले देश के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में विगत सवा-तीन महीनों से आज जो कुछ हो रहा है, वह एक प्रकार से मानवता के माथे पर कलंक सा है। आये दिन वहां का जो भयावह विद्रूप चेहरा दृष्टिगोचर हो रहा है, वह अराजकता की काली निशानी है। ऐसी घटनाएं केवल देशवासियों के लिए ही नहीं, बल्कि समग्र मानवजाति के लिए शोकप्रद एवं चिंताजनक हैं। वहां दानवता इतनी बेशर्मी से नाच रही है कि जिसे पढ़- सुनकर देश का हर एक नागरिक आज अत्यंत क्षुब्ध है। लूटपाट, आगजनी तथा हिंसा की घटनाओं से सभी का जीना दुष्कर हो चुका है। हजारो परिवार बेघर होकर इधर-उधर भटक रहे हैं, तो कई शरणस्थली निवास कर रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे पढाई कार्यों से वंचित है। सारा माहौल ही बिगडा है, जिसमें आम नागरिकों का जीना दुष्कर कर दिया है।

हर रोज बढ़ रही वारदातों पर ना सरकार का नियंत्रण है और ना ही सामाजिक संगठन कुछ कर पा रहे हैं। जातिगत द्वेषपूर्ण भेद-भावनाओं के वशीभूत होकर वहा का मानव पशुओं की भांति एक- दूसरों पर निर्ममता से वार कर रहा है। साथ ही सार्वजनिक संपदा को उध्वस्त करने में जुटा है।

आखिर क्यों कर ये दंगा फसाद बढ़ रहे हैं? इनपर विचार करेंगे, तो जातिगत आरक्षण मूल में नजर आता है । लगभग ३३ लाख की आबादी वाले इस छोटे से प्रांत में ५३ फ़ीसदी मैतेई समाज के लोग रहते हैं और ४३ फ़ीसदी कुकी लोग निवास करते हैं। इन दोनों समूहों का संघर्ष वैसे पहले से ही चल रहा है। कुकियों का निवास पहाड़ी बहुल प्रदेशों में है,तो मैतेइयों घाटी में! पहले से ही कुकी लोग अनुसूचित जनजाति (शेड्यूल्ड ट्राइब) समाविष्ट हैं। लेकिन जब मैतेई समाज को भी इसी शेड्यूल्ड ट्राइब में शामिल करने का विषय सामने आया और प्रयत्न जारी हुए, तब इसका कुकी लोगों ने विरोध करना आरंभ किया। इसके लिए आंदोलन शुरू हुए । इस पर मैतेई समूह की ओर से भी प्रतिआंदोलन शुरू हुए । परिणामस्वरूप इन दोनों समूहों में इतना संघर्ष बढता गया कि आज यह थमने

का नाम नहीं ले रहा। यह है जातिगत आरक्षण के महारोग का दुष्परिणाम ! आज इसने हमारे राष्ट्ररूप शरीर के घाव को नासूर बना दिया है। अब यह प्रान्तगत अवयवों को कटवाने पर तुला है।

इन्हीं अनिष्ट घटनाओं के दौरान एक ऐसी खौफनाक क्रूरतम घटना भी सामने आई, जिसके कारण सारा देश स्तब्ध वह नि:शब्द हो गया। सभी के मन व हृदय संतप्त हो उठे हैं। डेढ़ महीने पूर्व का एक ऐसा वीडियो वायरल हुआ, जिसे देखने का भी मन नहीं करता। ऐसा लगता है मानों महाभारतकालीन द्रौपदी के चीरहरण की पुनरावृति हो गई हो! हिंस्र मानव समूह की राक्षसी क्रूरता इतनी शिखर पर पहुंची कि जिस पर कुछ सोचने व लिखने तक मन नहीं करता। यह कैसा वक्त आ गया कि देश की स्वतंत्रता के अमृतकाल में देवीस्वरूपा मातृशक्ति का दिनदहाड़े खुलेआम सतीत्व लूटा जाता हो। लगभग आठ-नौ सौ की दरिन्दों की भीड़ ने तीन महिलाओं को निर्वस्त्र कर उन्हें सबके सामने घुमने के लिए के लिए प्रवृत्त किया। उन पर घिनौने अत्याचार किए गए। और वह अभी सुरक्षा रक्षकों के सामने! इनमें एक महिला २० वर्ष की है, दूसरी ४० वर्ष की और एक ५० वर्षीय ! युवा महिला के पिता को गोली से भूना जाता है । जब इस लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। जब लड़की का भाई इसका विरोध करता है,तब उसे भी मार दिया जाता है। यह कैसी दिल को दहलाने वाली घटना?

चाहे कुछ भी हो, लेकिन देश की नारी शक्ति का इस तरह चीरहरण कर उसपर पशुतुल्य और अमानवीय अत्याचार करना मानों हैवानियत की सीमा को पार करना है। इस दर्दनाक घटना से देश का हर एक नागरिक पूरी तरह से आहत है । एक तरह से देश की सभ्यता, संस्कृति व मानवता के ही चीर उतारे गए हो ! हमारे देश में नारी जाति को **'मातृ देवो भव!'** कहकर उसका सम्मान किया जाता है और निर्मात्री शक्ति के रूप में पुरुषों की अपेक्षा उसे सर्वोपरि माना जाता है। वेदादि शास्त्रों में **'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।'** कहकर उसे सर्वोच्च बिठाया जाता है। साथ ही **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:।'** का उद्घोष करने में हम थकते नहीं। और आज इस तरह नारी जाति पर क्रूरतम अत्याचारों का प्रकोप! कितना विरोधाभास है यह? यह वही देश है, जहां मां-बहनों की रक्षा के खातिर हमारे

(शेष पृष्ठ...११..पर)

– उपाकर्म पर्व के उपलक्ष्य में विशेष –

श्रावणी का अर्थ एवं महत्त्व

– गोपालशरण 'विद्यार्थी'(दिल्ली)

श्रावणी शब्द 'श्रु श्रवणे' धातु से सिद्ध होता है, जिसका अर्थ है, श्रवण करना, अर्थात सुनना। श्रवण के साथ-साथ मनन भी अनिवार्य है, वरना श्रवण निरर्थक हो जाता है। श्रवण कार्य के लिये तीन बाते आवश्यक हैं :- १. सुनानेवाला, २. सुननेवाला, ३.सुनाने योग्य कथा या विषयवस्तु! भारत जैसे कृषिप्रधान देश में सुनानेवालों और सुननेवालों की सुविधा की दृष्टि से वर्षा ऋतु के चार मास इसी कार्य के लिये नियत कर दिये गये थे। वर्षा के कारण हर वर्ग के लोग अपने-अपने कार्यों से विरत होकर बालकों की शिक्षा हेतु ऋषि-मुनियों, आचार्यों द्वारा संचालित गुरुकुलों में प्रवेश श्रावण मास में होता था और श्रावणी उपाकर्म तथा बालकों के विधिवत उपनयन संस्कार उपरान्त अध्ययन-अध्यापन का सत्र आरम्भ होता था। इन्हीं गुरुकुलों व आश्रमों में जन साधारण को कल्याणी वाणी वेद, जिनको **'श्रुति'** भी कहा जाता था। सुनाने हेतु ज्ञान यज्ञों (सत्संगों) की विशेष व्यवस्था होती थी। इस प्रकार स्वाध्याय, सत्संग और बृहद्यज्ञों के आयोजन निरन्तर चार मास तक चलते रहते थे। वर्षा ऋतु के कारण संन्यासी भी इन दिनों किसी स्थानपर रुक कर चातुर्मास पूरा करते थे। साधु-सन्तों, संन्यासियों के चरणों में बैठकर अध्ययन, स्वाध्याय और सत्संग का अवसर जनमानस को मिलता था। इस प्रकार श्रावणी का पर्व जहां जनमानस के लिये साधना और ज्ञान का पर्व था, वहां बुद्धिजीवियों के लिये विशेष आत्मनिरीक्षण और आत्मविश्लेषण का भी पर्व था। विद्वानों, ऋषि-मुनियों, संन्यासियों में विचार-विनिमय, सैद्धान्तिक चर्चा और शंकाओं के निवारण का इससे अच्छा कौन सा अवसर हो सकता था। आगामी वर्ष के अध्ययन-अध्यापन और ग्रंथों के प्रणयन की योजना विचारविमर्श कर इसी श्रावणी पर्व की अवधि में बनाई जाती थी, जिस पर कार्य आगे किया जाता था।

सुनाने और सुनने की विषयवस्तु अध्यात्म चर्चा ही थी, जिसमें प्रमुखतया वेद, वेदांग, ब्राह्मण

और अन्य सम्बद्ध विषय हुआ करते थे। छान्दोग्य उपनिषद के सप्तम प्रपाठक के प्रथम खंड में नारद और सनत्कुमार के संवाद से यह अभूतपूर्व जानकारी मिलती है कि कितनी विद्याओं का पठन-पाठन, प्रवचन और श्रवण प्राचीन भारत में था। कहते हैं कि एक बार सनत्कुमार ऋषि के पास सत्संग हेतु नारद मुनि पहुंचे और उनसे कहा, 'भगवान मुझे ज्ञान दीजिये!' ऋषि ने कहा- 'जो कुछ तुम पहले जानते हो, वह बतलाओ! तब मैं उससे आगे तुम्हें शिक्षा दूंगा।' नारद जी ने सीखी हुई जो विद्यायें गिनाई, वे इस प्रकार है -

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासं पुराणं पंचमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवनिधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजन विद्यामेतद् भगवोऽध्येमि।।२।।

(छान्दोग्य उपनिषद-सप्तम प्रपाठक)

१. ऋग्वेद २.यजुर्वेद ३. सामवेद ४. अथर्ववेद ५. इतिहास ६.पुराण (कथा साहित्य) ७. पंचम वेद (गन्धर्व वेद-संगीत व नृत्य शास्त्र) ८. पित्र्य विद्या (नृतत्व विज्ञान), ९. राशि विद्या (गणित व सांख्यिकी), १०. दैवविद्या (भौतिकी व रसायन शास्त्र) ११.निधि शास्त्र (वित्त एवं अर्थशास्त्र) १२. वाको-वाक्य (तर्कशास्त्र) १३. एकायन (नीति शास्त्र) १४. देव विद्या (द्यौ व अन्तरिक्षविज्ञान) १५.भूत विद्या (प्राणी विज्ञान और जैविकी) १६. क्षत्र विद्या (शास्त्र व युद्ध विद्या) १७. नक्षत्र विद्या (ज्योतिष) १८. सर्प विद्या (विष चिकित्सा) १९.देवजन विद्या (यज्ञ विज्ञान)! उन्नीस विषयों का ज्ञान नारद को था। इससे प्रतीत होता है कि प्राचीन भारत में शिक्षा, स्वाध्याय व सत्संग का स्तर कितना ऊंचा था? उपनिषदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नारद जैसे बुद्धिजीवी, विद्या व्यसनी और ज्ञान-पिपासु स्त्री-पुरुष कितने ही थे, अर्थात अनेकों थे। प्राचीन भारत में यह था, श्रावणी पर्व और इससे सम्बद्ध चातुर्मास का कमाल! वर्णाश्रम धर्म, आश्रम मर्यादा, ऋषियों के तर्पण (तृप्ति) सबके लिए एक ही मार्ग था - 'वेद एवं वैदिक वाङ्मय का अध्ययन, मनन, चिन्तन और उपदेश!' सन्यासी चाहे सारे कर्मों का त्याग कर दे, परन्तु स्वाध्याय उसके लिये भी जरुरी था। 'तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्राणिधान' श्रावणी पर्व का यही क्रिया योग था। धर्म के तीन स्कन्ध '१) यज्ञ, २)

अध्ययन (स्वाध्याय) और ३) दान' यह श्रावणी पर्व का विधि भाग था। जब तक श्रावणी पर्व इस प्रकार मनाया जाता रहा, वह काल वैदिक संस्कृति का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है।

श्रावणी पर्व का वर्तमान स्वरुप –

प्राचीन परम्परागत ढंग से श्रावणी पर्व का जो भव्य स्वरुप चला आ रहा था, विगत ६०० वर्षों से लुप्त प्रायः है, हां! कुछ चिह्न अवश्य बाकी हैं। विद्यालयों के सत्र अभी भी जुलाई मास से प्रारम्भ होते हैं। दक्षिण भारत में जन्म से ब्राह्मण समुदाय में उपाकर्म (यज्ञोपवीत परिवर्तन) की प्रथा शेष है। वर्णाश्रम व्यवस्था का प्राच्य स्वरुप विकृत हो चुका है। जीवन की भागदौड में स्वाध्याय खत्म ही हो चुका है। यवनों के शासन काल में उत्तर भारत में जब यज्ञोपवीत जबरन तोडे जाने लगे, तब पुरोहितों ने यजमानों के हाथों/कलाइयों पर मौलि बांधकर उपाकर्म की विधि पूरी कर ली। इसको '**रक्षासूत्र**' कहा जाने लगा। जब ब्राह्मणत्व का भी ऱ्हास हो गया, तो भारत की नारियों ने अपने धर्म की रक्षार्थ सबल वीरों की कलाइयों पर रक्षासूत्र बांध कर उनको अपना धर्मभाई कहना आरम्भ किया। इससे स्त्रियों के धर्म की रक्षा तो हुई, परन्तु कालान्तर में बहनों की अपने सहोदर तथा रिश्ते व धर्म के भाइयों के हाथों में रक्षा सूत्र(जिसका नाम राखी हो गया) बांधने की परिपाटी ही पड गई। श्रावणी ने रक्षा बन्धन का रुप बहिन भाई के पवित्र प्रेम के प्रतीक के रुप में ले लिया। अर्थप्रधान इस युग में आज रक्षा सूत्र(राखी) भी द्रव्य सूत्र बन गई है। बहिनों के प्रति भाइयों में रक्षा उत्तरदायित्व की भावना का स्थान रुपयों या द्रव्य ने ले लिया है, जिसको प्राप्त कर बहिनें भी खुश और भाई भी अपने दायित्वों से मुक्त!

हमारा कर्तव्य -

दुर्भाग्य से हमारे साक्षर वर्ग में यह धारणा बन गई है कि समाज के कल्याण और उसकी सुख समृद्धि के लिये विज्ञान व प्रौद्योगिकी, कला कौशल, प्रबन्धन और राजनीति ही पर्याप्त है। उनके लिये हमारा पुरातन ज्ञान-विज्ञान, धर्म, दर्शन केवल अकादमिक दिलचस्पी की चीजें हैं, उनका व्यावहारिक महत्त्व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नगण्य है। वेद, शास्त्र, अध्यात्म, धर्म, दर्शन पर चर्चा तो होती है, परन्तु साक्षर वर्ग उनको गम्भीरता से नहीं लेता।

उपरोक्त समस्या के समाधान

का दायित्व वर्तमान में यदि किसी संस्था पर आता है तो वह है महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित '**आर्य समाज**'! महर्षि ने जिस प्रकार वेद और सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय को पुनः प्रतिष्ठित किया उसी प्रकार आर्य समाज और उसके सभासदों को उचित है कि '**श्रावणी पर्व**' से सम्बद्ध प्राचीन काल के उपाकर्म, उत्सर्जन, वेद और आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय, प्रवचन, ऋषि तर्पण और वर्षाकालीन यज्ञों को प्रतिपादित करने की परम्परा को पुनर्जीवित करें।

स्वाध्याय व्रत और उसका माहात्म्य–

अन्तिम महत्त्वपूर्ण बात यह कि वेदों में, पर्वों में, व्रतों में, संस्कारों में, यज्ञों में, धर्माचरण में श्रद्धा और दृढता तभी आयेगी जब हम स्वाध्यायशील होंगें। स्वाध्यायशील होने के लिये जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना जरुरी है '**स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद्दैवे चैवेह कर्मणि।**' (मनुस्मृति ३/७४)। पांतजलि योगदर्शन के अनुसार परम क्रिया योग है- '**तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः।**'(योगदर्शन २/१)। श्रींमद्भगवद्गीता के अनुसार परम तप है। '**स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।**'(गीता १७/१५)। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार 'वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनना सब आर्यों का परम धर्म है।' अतः श्रावणी पर्व पर स्वाध्याय के व्रत से बढकर और कोई व्रत नहीं हो सकता।

स्वाध्याय की महिमा स्मृतियों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में भरपूर गाई गई है। '**स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन्।**' (मनुस्मृति ३/८१) स्वाध्याय से ऋषियों की अर्चना होती है। '**स्वाध्यायान्मा प्रमदः। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।**'(तैत्तिरीयोपनिषद् १/११)। स्वाध्याय में प्रमाद न करे। स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करे। शतपथ ब्राह्मण में तो स्वाध्याय के लाभों को बहुत ही सुन्दर वर्णन है-

'**अथातः स्वाध्यायप्रशंसा। प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवतो युक्तमना भवत्यपराधीनोऽहरहरर्थान् साधयते सुखम् स्वपिति परम चिकित्सक आत्मनो भवतीन्द्रिय-संयमश्च एकरामता च प्रज्ञा वृद्धिर्यशो लोकपंक्तिः। प्रज्ञा वर्धमाना चतुरो धर्मान् ब्राह्मणामभिनिष्पादयति ब्राह्मण्यं प्रतिरुपचर्या यशो लोकपंक्तिम लोकः पच्यमानश्चतु-र्भिर्धर्मे ब्राह्मणं भुनक्त्यर्चया च दानेन जाच्येतया चावध्यतया च। ये ह वै**

के च श्रमाः इमे द्यावापृथिवी अन्तरेण, स्वाध्यायो हैव तेषां परमता काष्ठा य एवं विद्वान स्वाध्यायमधीते तस्मात्स्वाध्यायो अध्येतव्यः।

(शतपथ ब्राह्मण ११/५/७/१-२)

अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन दोनों प्रिय कर्म है। इन्हें करनेवाला मनुष्य एकाग्र मन हो जाता है, पराधीन नहीं होता। दिन-प्रतिदिन साधना में सफल होता है, सुख से सोता है, अपने आपका परम चिकित्सक बन जाता है। इन्द्रियों का संयम, एक रसता, प्रज्ञावान और लोगों में यश प्राप्त करता है। प्रज्ञा की वृद्धि से ब्राह्मणत्व, अनुकूल आचरण, कीर्ति और लोक कल्याण को प्राप्त होता है। सत्कार, दान, श्रद्धा और अवध्यता का पात्र हो जाता है। द्यौ और पृथिवी के बीच जो श्रम है, स्वाध्याय ही उसका लक्ष्य है। जो विद्वान इस प्रकार स्वाध्याय करता है वह परम लक्ष्य और श्री को प्राप्त होता है, अतः स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। उच्चतम अर्थात् प्रभु का परम पद पाने के लिये श्रावणी के पावन पर्व पर स्वाध्याय से बडा कोई व्रत नहीं और स्वाध्याय एवं प्रवचन से बडा कोई कर्तव्य नहीं। श्रावणी के पावन पर्व पर हम स्वाध्याय का व्रत लें। वेदों और आर्ष ग्रंथों को पढे, पढायें, सुने-सुनायें। रक्षा बन्धन के साथ-साथ उपाकर्म, ऋषियों, मनीषियों, आचार्यों का अर्चन करें और ज्ञान एवं साधना यज्ञों की परम्परा को आगे बढाते हुए श्रावणी के प्राचीन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करें, यही हमारा कर्तव्य है।

(सार्वदेशिक साप्ताहिक-१६.०८.१९९८ - श्रावणी विशेषांक से साभार)

संपादकीय (शेष भाग)-

अनेकों पूर्वज नरपुंगवों ने अपना बलिदान दिया था। इसी कारण ही तो मातृशक्ति की प्रतिष्ठा व सम्मान का स्वर्णिम इतिहास लिखा गया। लेकिन आज यह क्या हो रहा है ? दुर्भाग्य से आज हमें ऐसे भी दिन देखने मिल रहे हैं, जहाँ की नारियों का उत्पीडन बढता ही जा रहा है। उनपर होनेवाले अत्याचार शिखर पर हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्युरों के अनुसार भारत में महिलाओं के विनयभंग के हर घंटे में करीब ४९ मामले और बलात्कार के प्रतिदिन के लगभग ८४ मामले दर्ज हैं। इस प्रकार मातृशक्ति और कबतक सहती रहेगी? इसलिए प्रशासन को आवश्यक है कि वह इन क्रूरतम अपराधियों को शीघ्रही खुले आम फांसी पर लटकावें और अपनी कानूनव्यवस्था को विश्वसनीय बनावें।

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

महाराष्ट्र सभा के कार्यकारी प्रधान एवं वैदिक मनीषि

श्री माधवरावजी देशपांडे अनन्त की ओर

आर्य जगत् को विदित कराते हुए दुख हो रहा है कि वैदिक विचारों के प्रखर अनुयायी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री एवं वर्तमान कार्यकारी प्रधान तथा आर्य समाज पिम्परी पुणे के उपप्रधान श्री माधवरावजी देशपाण्डे आज हमारे मध्य में नहीं रहे। दि.२४ जुलाई २०२३ (सोमवार) की रात्रि में १०.३० को वाईरल इन्फेक्शन के कारण पुणे के ज्युपिटर अस्पताल में उपचाररत उन्होंने अन्तिम सांस ली। परिवारवालों ने अथक प्रयासों से अत्याधुनिक चिकित्सा उपलब्ध करायी तथा चिकित्सकों ने भी अत्यधिक प्रयत्न किये। लेकिन 'ईश्वरेच्छा बलीयसी' के नुसार उन्होंने मात्र तीन दिनों के भीतर अपनी जीवनलीला समाप्त की। श्री देशपाण्डेजी के अकस्मात् चले जाने से जहां परिवार की अपूर्व हानि हुई, वहीं आर्यजगत्, महाराष्ट्र सभा एवं आर्य समाज पिम्परी की भी अपूरणीय क्षति हुई है।

७५ वर्षीय श्री देशपाण्डे अपने पश्चात् धर्मपत्नी श्रीमती नलिनी, पुत्र श्री पराग एवं स्नुषा सौ.सरोजा, कन्या सौ.पल्लवी व दामाद श्री समीर आमटे, भाई एवं पौत्र-पौत्रियों को छोडकर विदा हुए।

श्री माधवरावजी महर्षि दयानन्द के परमभक्त, आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्त्ता, कुशल संगठक, लेखक, मार्गदर्शक एवं वैदिक सिद्धान्तों के कट्टर अनुयायी रहे हैं। पेशे से शासकीय स्थापत्य अभियन्ता के रूप में भी आपने उत्कृष्ट रुपेण प्रशासकीय सेवाएं दी और अपनी कर्तव्य परायणता व विद्वत्ता की साख जमाई थी। वैदिक ग्रन्थों का श्रद्धापूर्वक अध्ययन कर उन्होंने वेदधर्म के प्रचार-प्रसार में भी योगदान दिया।

*** अल्पपरिचय –**

लातूर जिले के काजल हिप्परगा(ता.अहमदपुर) जैसे छोटे से

ग्राम में कृषक परिवार में ४ जून १९४८ को जन्में श्री माधवराव का बाल्यजीवन नानाविध प्रतिकूलताओं से बीता। आरम्भिक शिक्षा स्वग्राम में तथा माध्यमिक शिक्षा ननिहाल मुदखेड में हुई। तत्पश्चात् सम्भाजीनगर (औ.बाद) में महाविद्यालयीन एवं स्थापत्य अभियान्त्रिकी पढाई सम्पन्न हुई। अध्ययन के बाद वे सन् १९७० में महाराष्ट्र शासन के सिंचाई विभाग में अभियंता पद पर नियुक्त हुए। लगभग ३३ वर्ष तक सम्भाजीनगर व नासिक में इस पद पर रहकर प्रामाणिकता के साथ कार्य किया। २००२ में निवृत्त होने के बाद भी शासन के सिंचाई विभाग में '**धरण संकल्पन परामर्शदाता व मुख्य अभियन्ता**' के रूप में कार्य किया। जिसमें ८० धरणों का आपने संकल्पन किया। यद्यपि वे सरकारी नोकरी पर कार्यमग्न रहे, फिर भी विद्वत्सान्निध्य, स्वाध्याय, सत्संग-चिन्तन व आर्य समाज सामाजिक कार्यों में सर्वतोमना संलग्न रहे।

सन् १९७२ में आपका विवाह हुआ। वाघमारे कुल की संस्कारशील कन्या नलिनी आपको सहधर्मिणी के रुप में मिली। इसके आपकी गृहस्थ जीवन वाटिका अत्यधिक सुमधुर व सुगन्धित हुई। निलंगा की सिंधुताई बापुसाहब वाघमारे यह सौ.नलिनी की मौसी रही है। इस लिए इनका वाघमारे परिवार से भी निकट का सम्बन्ध रहा है। इसी परिवार के विद्वान आय.पी.एस.अधिकारी श्री बापूसाहबजी वाघमारे जो कि अपने सरकारी नोकरी के साथ वेदप्रचार भी करते थे। इनके सुसान्निध्य व प्रेरणा से आप आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए। वैदिक सत्यसिद्धान्तों व महर्षि दयानन्द के विशुद्ध तत्वज्ञान से आपका जीवन आध्यात्मिक दृष्टि से सुविकसित होता गया। संस्कृत, वेद, उपनिषद आदि साहित्य का लगन से अध्ययन कर आर्य वैचारिक निष्ठा अधिक दृढ हुई।

श्री दयाराम बसैये की प्रेरणा से आपका आर्य समाज सम्भाजीनगर से भी जुड गये और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते रहें। इसी दौरान आप इस समाज के प्रधान पद पर भी नियुक्त हुए। जब आपका नासिक में तबादला हुआ, तब वहां की आर्य समाज पंचवटी से सपरिवार संलग्न हुए। लगभग १० वर्ष तक आप इस आर्य समाज के प्रधान पद पर नियुक्त हुए। स्थानीय दै.सकाल एवं अन्य समाचारपत्रों में भी आपके लेख प्रकाशित होते रहे। साथ ही उनके 'वैदिक काळात गायीचे स्थान',

'सत्यार्थ प्रकाश का व कशासाठी?' आर्य मराठी पुस्तके छापी तथा वेदविज्ञान परिचय, 'वेदोक्त विमानविद्या' व अन्य पुस्तकों का मराठी भाषा में अनुवाद किया है। आर्य समाज पिम्परी द्वारा प्रकाशित 'मराठी सत्यार्थ प्रकाश' की नयी आवृत्ति का सम्पादन भी आपने ही किया है। अभी छह माहपूर्व उन्होंने स्वामी समर्पणानन्द विरचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' इस ग्रन्थ का मराठी में अनुवाद भी किया है, जिसका प्रकाशन आर्य वैदिक मनीषि डॉ.वागीशजी आचार्य के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर आपके विवाह की ५0वी वर्षगांठ एवं आपके यशस्वी जीवन का अमृत महोत्सव भी मनाया गया, जिसमें अनेकों मान्यवर उपस्थित रहे थे। आपके सराहनीय कार्यों को देखते हुए आर्य समाज काकडवाडी मुम्बई में २०१८ में 'आर्य कर्मयोगी' यह सम्मान प्रदान कर आपका गौरव किया।

वैदिक रीति से अंतिम संस्कार –

दिवंगत श्री देशपांडे के पार्थिक शरीर पर दुसरे दिन सायंकाल पुणे में पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। यह संस्कार वैदिक पुरोहित सर्वश्री पं.विश्वनाथजी आर्य, पं.विवेक आर्य, पं.हेमंत आर्य (खापर), प्रा.सोनेरावजी आचार्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं.अविनाश आचार्य आदियों ने वैदिक मन्त्रों के उद्घोष के साथ सफलतापुर्वक किये। इसकी पूर्ण व्यवस्था आर्य समाज पिम्परी की ओर से की गयी। इस अवसर पर सम्पन्न हुई श्रद्धांजलि सभा में सर्वश्री दयारामजी बसैये (सभा उपप्रधान), मुरलीधरजी सुंदराणी(संरक्षक आर्य समाज-पिंपरी), उत्तमरावजी दंडिमे, आचार्य धर्मवीरजी, भरतजी वाघमारे, मधुकरराव कुलकर्णी, अनिल देशपांडे, सभामंत्री राजेंद्र दिवे, वैदिक विद्वान प्रा.सोनेरावजी आचार्य, प्रा.साईनाथ पुन्ने, पं.विवेक आर्य, उग्रसेनजी राठौर(सभा कोषाध्यक्ष), प्रमोदकुमारजी तिवारी(उपप्रधान), विजयकुमारजी कानडे (सभा उपमंत्री) आदियों ने श्रद्धांजलि पर विचार व्यक्त किये। इस सभा का संयोजन डॉ.नयनकुमार आचार्य ने किया। सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन श्रीमती नलिनी देशपांडे एवं सौ.पल्लवी आमटे ने किया। दि.२७ जुलाई को सायं.४.३० बजे आर्य समाज पिम्परी में शांतियज्ञ एवं शोकसभा सम्पन्न हुई। ऐसे आर्य समाज के विद्वान कुशल संगठक एवं लेखक के चले जाने से आर्य समाज व प्रान्तीय सभा अपूरणीय क्षति हुई है।

***

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान - २०२३

(राज्यस्तरीय श्रावणी उपाकर्म पर्व-वेद प्रचार माह)

दि.१७ अगस्त से १४ सितम्बर २०२३

-* नम्र निवेदन *-

मान्यवर वैदिक व्याख्याता, आर्य भजनोपदेशक तथा सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गण,

आप सभी को सादर नमस्ते..!

आशा है आप आनंद एवं कुशल होंगें । **'मानवजीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार योजना-२०२३'** यह कार्यक्रम आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। सभी विद्वानों एवं भजनोपदेशकों ने इसके लिए सहर्ष स्वीकृति देकर महाराष्ट्र सभा को कृतार्थ किया है। आप सभी प्रचारकों का पुण्यभूमि महाराष्ट्र में हार्दिक स्वागत है। सभांतर्गत सभी आर्य समाजें अपने श्रावणी महोत्सव में आपकी प्रतीक्षा में है।

जैसे की सभी को सुविदित ही है कि वेदप्रचार कार्य में अग्रेसर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी दि.१७ अगस्त से १४ सितम्बर २०२३ तक श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव मनाने का शुभसंकल्प किया है। युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में इस वर्ष के श्रावणी उपाकर्म पर्व स्वामीजी के प्रति समर्पित है। आमन्त्रित विद्वान व्याख्याता एवं भजनोपदेशकों ने इस विचार को ध्यान में रखते हुए वेद प्रचार करना है।

विद्वानों एवं आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि, श्रावणी कार्यक्रमों को आप उत्साह के साथ मनावें। इसमें परिवर्तन करने का प्रयत्न न करें। ईश्वर से सृष्टि बनाई व वेदज्ञान दिया है । यह सब जीवात्मा के कल्याण के लिए ही है । वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। आज के आधुनिक युग में भी मानव मात्र की व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक समस्याओं के दु:खों का इलाज(चिकित्सा) तथा पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक, राजकीय, नैतिक,

न्याय, सुरक्षा सभी समस्याओं का निवारण करने की शक्ति केवल वेदज्ञान में ही है, अतः इसी वेदज्ञान को यही इस श्रावणी मास में कार्यक्रमों द्वारा मानवमात्र को बताना है। बीमारों की तंदुरुस्ती के लिए तथा युवा पीढी सुदृढ चरित्रवान् एवं स्वस्थ बनाने के लिए सभी को शाश्वत सुख का वेदमार्ग व तत्त्वज्ञान बताना आवश्यक है।

सभी आर्यसमाजें अपने श्रावणी कार्यक्रमों को व्यापक रुप देवें। कार्यक्रमों के विज्ञापन पत्र छपवाकर कार्यक्रमों का अधिकाधिक प्रचार करें। प्रातः यज्ञ, भजनोपदेश, आध्यात्मिक प्रवचन व बाद में स्कूल अथवा कॉलेज में व्याख्यान, सायंकाल पारिवारिक सत्संग एवं रात्रि आर्यसमाज में भजन व व्याख्यान रखें। साथ ही जिज्ञासुओं के लिए शंकासमाधान रखे। गाँव अथवा नगर में घूमकर लोगों से चंदा माँगकर दान संकलित करें। सभा को अधिक से अधिक वेदप्रचार निधि प्रदान करें। प्रेषित किये गए विद्वानों का उत्तम प्रकार से आदरातिथ्य कर उनका सम्मान करें। वेदप्रचार में निम्न विषयों को केंद्रीभूत मानकर व्याख्यानों का आयोजन करें।

१) वेदज्ञान की प्रासंगिकता २) हमारा परिवार सुखी कैसे बनें?
३) आत्मिक सुख शान्ति कैसे प्राप्त करें?
४) ईश्वर का सत्य स्वरूप और बढता पाखंड
५) वैदिक सिद्धान्तों से ही मानव सुरक्षित ६) बच्चों का नवनिर्माण
७) विश्वशान्ति का उपाय-वेदज्ञान ८) समाज के प्रति हमारा उत्तरदायित्व
९) यज्ञ से पर्यावरण की रक्षा १०) आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संघटन
११) म.दयानन्द की विशेषताएँ १२) राष्ट्रनिर्माण में आर्य समाज की भूमिका
१३) संस्कृति व मानवता की रक्षा १४) नारी का सम्मान
१५) हैदराबाद संग्राम में आर्य समाज का योगदान

विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा आयोजक आर्यसमाजों को श्रावणी वेदप्रचार अभियान की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ..!

—— -: विनीत :- ——

योगमुनि	**राजेन्द्र दिवे**	**उग्रसेन राठौर**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)
८२०८२५२३३६	९८२२३६५२७२	९४२२२४१८४७	९४२०३३०१७८

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ
जि.बीड (महाराष्ट्र)

कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी हेतु सभा व्यवस्थापक
श्री रंगनाथजी तिवार (९४२३४७२७९२) इनसे सम्पर्क करें..!

||ओ३म्||

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में

मानवमात्र की सुख-शांति एवं सर्वंकष विकास हेतु
वेदप्रचार का व्यापक उपक्रम

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान - २०२३

(श्रावणी उपाकर्म पर्व-वेद प्रचार माह)

दि.१७ अगस्त से १४ सितम्बर २०२३

राज्यस्तरीय कार्यक्रम

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
आचार्य पं.सानन्दजी शास्त्री (वैदिक व्याख्याता) पानीपत(हरियाणा) एवं **पं.अजयजी आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) मेरठ (उ.प्र)	आर्यसमाज,स.भु.कॉलनी,छ.संभाजीनगर	१७ से १९ अगस्त २०२३
	आर्यसमाज, गारखेड,छ.संभाजीनगर	२० से २२ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, बीड	२३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज,परली-वै. जि.बीड	२४ से ३० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, किल्ले धारुर जि.बीड	३१ अगस्त से ४ सित.२३
	आर्य समाज, रेणापुर जि.लातूर	५ से ७ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, रामनगर , लातूर	८ से १३ सितम्बर २०२३
आचार्य पं.यशवीरजी शास्त्री (वैदिक व्याख्याता) नई दिल्ली एवं **पं.नेत्रपालसिंह आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) बरेली (उ.प्र.)	आर्य समाज, पूर्णा जि.परभणी	१७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, हिंगोली	१८ से २१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, नांदेड	२२, २३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, निवघा ता.हदगांव	२४ से २६ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, हदगांव	२७ से ३१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, मुदखेड	१, २ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, धर्माबाद	३ से ७ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, देगलुर	८ से १२ सितम्बर २३
	आर्य समाज, परभणी	१३ से १६ सितम्बर २३

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
आचार्य पं.ज्ञानप्रकाशजी शास्त्री(वैदिक व्याख्याता) बलिया(उ.प्र.) एवं **पं.विष्णू आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) मथुरा(उ.प्र.)	आर्य समाज, सोलापुर	१७ से २३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर	२४ से ३० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, भक्तिनगर, लातूर	३१ अगस्त, १ सित. २०२३
	आर्य समाज, सुगाव ता.चाकुर	२ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, शिवणखेड ता.चाकुर	३ से ७ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, करडखेल ता.उदगीर	८ से १० सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, लोहारा ता.उदगीर	११ से १३ सितम्बर २०२३
प्रा.डॉ.अखिलेशजी शर्मा (वैदिक व्याख्याता) जलगांव	आर्य समाज, मंजुषा कॉलनी,जलगांव	२० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, नसिराबाद ता.जि.जलगांव	२७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, विदगांव ता.जि.जलगांव	३ सितम्बर २०२३
आचार्य पं.विवेकजी दीक्षित(वैदिक व्याख्याता) फरिदाबाद (हरि.) एवं **पं.अमरेशजी आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) देवबन्द(उ.प्र.)	आर्य समाज, उमरगा जि.धाराशिव	१७ से २० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, गुंजोटी ता.उमरगा	२१ से २३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, औराद ता.उमरगा	२४, २५ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, माडज ता.उमरगा	२६, २७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, निलंगा जि.लातूर	२८ से ३१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, औराद शहाजानी	१ से ६ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, उदगीर जि.लातूर	७ से १३ सितम्बर २०२३
आचार्य पं.शिवकुमारजी शास्त्री (वैदिक व्याख्याता) सहारनपुर(उ.प्र.) एवं **पं.प्रदीपजी आर्य** (आर्य भजनोपदेशक) फरिदाबाद(हरियाणा)	आर्य समाज, वारजे मालवाडी, पुणे	१७ से २१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, पिंपरी, पुणे	२२ से २७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, नानापेठ, पुणे	२८ से ३० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, देवलाली कैम्प,नाशिक	३१ अगस्त से २ सित.२३
	आर्य समाज, भगूर, नाशिक	३, ४ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, पंचवटी, नाशिक	५ से ७ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, मालेगांव जि.नाशिक	८, ९ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, धुलिया(धुळे)	१० से १६ सितम्बर २०२३
पं.शेषरावजी शिंदे (वैदिक व्याख्याता)-हदगांव एवं **पं.सोगाजी घुन्नर**-हदगांव (आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, तामसा ता.हदगाव	२० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, कंजारा ता.हदगाव	२१ अगस्त २०२३

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
पं.अशोकजी कातपुरे–सुगांव **वैद्य विज्ञानमुनिजी**–परली (वैदिक व्याख्याता) एवं **पं.शिवाजी निकम** (आर्य भजनोपदेशक) मोगरगा	आर्य समाज, वलांडी ता.देवणी	१८ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, मदनसुरी ता.निलंगा	१९ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, येलमवाडी ता.निलंगा	२० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, कासार बालकुंदा	२१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, बडूर ता.निलंगा	२२ अगस्त २०२३
	आर्य समाज,कासार शिरसी ता.निलंगा	२३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, रामेगांव ता.औसा	२४ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, मोगरगा ता.औसा	२५ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, मंगरुळ ता.औसा	२६ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, बेलकुंड ता.औसा	२७ अगस्त २०२३
पं.अशोकजी कातपुरे (वैदिक व्याख्याता)–सुगांव एवं **पं.सोगाजी घुन्नर**-हदगांव (आर्य भजनोपदेशक) **श्रीमती सुलोचना शिंदे**-निवघा (आर्य भजनोपदेशिका)	आर्य समाज, जरोडा ता.कळमनुरी	३ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, घोडा ता.कळमनुरी	४ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, येहळेगांव ता.हदगांव	५, ६ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, भाटेगांव ता.हदगाव	७ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, शिऊर ता.हदगाव	८ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, तळणी ता.हदगाव	९, १० सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, डोंगरगांव ता.हदगाव	११ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, बाराहळी ता.हदगाव	१२ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, कंधार ता.हदगाव	१३ सितम्बर २०२३
पं.प्रतापसिंहजी चौहान(भजनोपदेशक) **सौ.सुमनबाई** **चौहान**(उपदेशिका)उदगीर	आर्य समाज, बोरुळ ता.उदगीर	१७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, चाकुर ता.चाकुर	१८ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, वडवळ ता.चाकुर	१९ अगस्त २०२३
पं.राजवीरजी शास्त्री (वैदिक व्याख्याता) सोलापुर **पं.प्रतापसिंहजी चौहान** (भजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, बोटकुळ ता.निलंगा	७, ८ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, धनेगाव ता.देवणी	९ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, बिबराळ ता.शि.अनंतपाळ	१० सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, उजेड ता.शि.अनंतपाळ	११ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज,अजनी ता.शि.अनंतपाळ	१२, १३ सित.२०२३
पं.अनिलजी आर्य (वैदिक व्याख्याता) धर्माबाद	आर्य समाज, शहापुर ता.देगलुर	१९, २० अगस्त २०२३

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
पं.अभिषेकजी आर्य (वैदिक धर्मप्रचारक)परली एवं **पं.प्रतापसिंहजी चौहान** (आर्य भजनोपदेशक) उदगीर एवं **पं.सदाशिवराव जगताप** (वैदिक धर्मप्रचारक) वाशी	आर्य समाज, कळंब जि.धाराशिव	२१ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, वाशी जि.धाराशिव	२२, २३ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, घाटपिंपरी ता.वाशी	२४ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, चांदवड ता.वाशी	२५ अगस्त २०२३
	आर्य समाज,अंजनसोंडा ता.परंडा	२६ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, ईट ता.वाशी	२७ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, गिरवली ता.वाशी	२८ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, मानेवाडी ता.जि.बीड	२९ अगस्त २०२३
	आर्य समाज, तेरखेडा जि.धाराशिव	३० अगस्त २०२३
	आर्य समाज, धाराशिव(उ.बाद)	३१ अगस्त, १ सितम्बर २३
प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी	आर्य समाज, हाळी ता.उदगीर	१९,२० अगस्त २०२३
प्रा.डॉ.नरेन्द्रजी शिंदे-वै.व्याख्याता	आर्य समाज, टाकळी ता.उदगीर	२६, २७ अगस्त २०२३
पं.आनन्दजी शास्त्री	आर्य समाज, नेत्रगांव ता.उदगीर	२० अगस्त २०२३
पं.प्रमोदजी शास्त्री वै.व्याख्याता	आर्य समाज, हेर ता.उदगीर	२७ अगस्त २०२३
प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री **सौ.डॉ.वीरश्री शास्त्री** (वैदिक व्याख्याता/भजनोपदेशक) परली	आर्य समाज,माजलगांव जि.बीड	३ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज, साकोळ ता.शि.अनंतपाळ	९,१० सितम्बर २०२३
पं.चंद्रकांतजी वेदालंकार (वैदिक व्याख्याता) हिंगोली	आर्य समाज,आखाडा बाळापुर	२७ अगस्त २०२३
पं.माधवरावजी देशपांडे **सौ.नलिनीदेवी देशपांडे** (वैदिक व्याख्याता) पुणे	आर्य समाज,आळंदी, पुणे	३ सितम्बर २०२३
	आर्य समाज,चिंचवड, पुणे	१० सितम्बर २०२३
पं.भानुदासरावजी देशमुख **प्रा.लक्ष्मीकांतजी शास्त्री** (वै.व्याख्याता)	आर्य समाज, घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई	११ सितम्बर २०२३
पं.दयानंदजी शास्त्री-वै.व्याख्याता **पं.दिगंबरजी शास्त्री** -वै.व्याख्याता	आर्य समाज,जिंतूर जि.परभणी	२७ अगस्त २०२३

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
ॲड.जोगेन्द्रसिंहजी चौहान (वै.व्याख्याता)छ.सम्भाजीनगर	आर्य समाज, जालना	२७ अगस्त २०२३
पं.लक्ष्मणराव आर्यगुरुजी(वै.व्याख्याता) **प्रा.डॉ.अरुणजी चव्हाण**(वै.व्याख्याता) **प्रा.अभयजी तिवार**(भजनोपदेशक)परली	आर्य समाज, अंबाजोगाई जि.बीड आर्य समाज, गंगाखेड जि.परभणी	१९, २० अगस्त २०२३ ३ सितम्बर २०२३
पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी(वै.व्याख्याता) **प्रा.धोंडीरामजी शेप** गुरुजी (वैदिक व्याख्याता) -जिंतूर	आर्य समाज, अंजनडोह ता.धारुर आर्य समाज, येलदरी ता.अहमदपुर आर्य समाज, अंधोरी ता.अहमदपुर	२८ अगस्त २०२३ ४ सितम्बर २०२३ ५ सितम्बर २०२३
पं.नारायणरावजी कुलकर्णी (वैदिक व्याख्याता) नांदेड	आर्य समाज, अहमदपुर जि.लातूर	११ सितम्बर २०२३
आचार्य सत्येन्द्रजी आर्य गुरुकुल, परली **पं.भागवतराव आघाव** सारडगांव	आर्य समाज, सारडगांव ता.परली आर्य समाज, मांडवा ता.परली	५ सितम्बर २०२३ ६ सितम्बर २०२३
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य **पं.रंगनाथजी तिवार**-परली **पं.महेशजी आर्य**-कोल्हापुर	आर्य समाज, कोल्हापुर आर्य समाज, इचलकरंजी	१० सितम्बर २०२३ ११ सितम्बर २०२३
वैद्य विज्ञानमुनिजी-परली **पं.दिलीपसिंहजी आर्य**-माडज	आर्य समाज, कदेर ता.उमरगा आर्य समाज, बेडगा ता.उमरगा आर्य समाज, अणदूर ता.तुळजापुर	२८ अगस्त २०२३ २९ अगस्त २०२३ ३० अगस्त २०२३
डॉ.प्रकाशजी कच्छवा **पं.अशोकजी शिंदे**-माडज	आर्य समाज, हलगरा ता.निलंगा आर्य समाज, नदीवाडी ता.निलंगा	२० अगस्त २०२३ २७ अगस्त २०२३
पं.दिनेशजी शास्त्री **पं.अजितजी शाहीर**-निलंगा	आर्य समाज, सय्यद अकुलगा आर्य समाज, हनुमंतवाडी ता.निलंगा	२० अगस्त २०२३ ३ सितम्बर २०२३
श्री राजेन्द्रजी दिवे-लातूर **पं.नारायणजी शास्त्री**-लातूर	आर्य समाज, पानचिंचोली ता.निलंगा आर्य समाज, होळी ता.औसा	२० अगस्त २०२३ ३ सितम्बर २०२३

विद्वान व भजनोपदेशक	आर्य समाजें	कार्यक्रम तिथियाँ
पं.श्रीरामजी आर्य-वै.व्याख्याता **पं.प्रकाशवीरजी आर्य**-पुरोहित **पं.रामेश्वरजी राऊत**-भजनोपदेशक	आर्य समाज, मुशिराबाद ता.जि.लातूर आर्य समाज, टाका ता.औसा	२० अगस्त २०२३ ३ सितम्बर २०२३
प्रा.सोमदेवजी शिंदे-वै.व्याख्याता **प्रा.चंद्रेश्वरजी शास्त्री**-वै.व्याख्याता **सौ.कांचनदेवी शास्त्री**-भजनोपदेशिका	आर्य समाज, गांजूर ता.चाकूर आर्य समाज, स्वा.सै.कॉलनी,लातूर	२० अगस्त २०२३ ३ सितम्बर २०२३
पं.योगीराजजी भारती-परली **पं.वशिष्टजी आर्य** -अंबाजोगाई	आर्य समाज, शिराढोण ता.कळंब आर्य समाज, बनसारोळा ता.अंबाजोगाई	३ सितम्बर २०२३ १० सितम्बर २०२३

*** समाचार दर्पण ***

राज्य में होगा २०० वां भव्य ऋषिजन्मोत्सव

सभी को ज्ञात ही है कि यह वर्ष युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द का २०० वा जन्मशताब्दी वर्ष चल रहा है। इसका उद्घाटन १२ फरवरी २०२३ को नई दिल्ली में बृहद् समारोह के साथ प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के करकमलों से हुआ। अब देश के सभी प्रान्तों में राज्यस्तरीय ऋषिजन्मोत्सव मनाने की तैयारियां चल रही है। इसी शृंखला में महाराष्ट्र में भी यह जन्मोत्सव भव्यता के साथ मनाने की दिशा में प्रयत्न जारी हैं। इस सन्दर्भ में पुणे की पिम्परी आर्य समाज में दि.९ जुलाई को राज्य की मुम्बई, विदर्भ व महाराष्ट्र इन तीन सभाओं की संयुक्त बैठक सम्पन्न हुई। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में मुम्बई सभा के मन्त्री श्री महेशभाई वेलाणी प्रमुख मार्गदर्शक के रुप में उपस्थित रहें। बैठक प्रास्ताविक भूमिका महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री राजेन्द्र दिवे ने रखी। महाराष्ट्र शासन के सहयोग सभी आर्यजन मिलकर ऋषि का द्विजन्मशताब्दी समारोह कैसे मनाये? इस विषय पर सभी अपने-अपने सुझाव रखें।

विचार व्यक्त करनेवालों में सर्वश्री दयाराम बसैये(उपप्रधान सभा), प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी(उपमन्त्री सभा), उत्तमराव दंडिमे, माधवरावजी देशपांडे

(कार्यकारी प्रधान), व्यंकटेशजी हालिंगे (प्रान्तीय आर्यवीरदल अधिष्ठाता), आर्ययुवक रोहित जगदाले, शंकरराव बिराजदार(उपमन्त्री सभा), डॉ.नयनकुमार आचार्य आदियों का समावेश है। इस बैठक में श्री वेलाणी जी ने कहा कि, जिस महाराष्ट्र भूमि पर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर संगठित रूप से वेद प्रचार करने हेतु सारे विश्व को एक ऐतिहासिक मंच दिया, ऐसे ऋषि का द्विजन्म शताब्दी महोत्सव व्यापक रुप से मनाना उचित होगा। जिसके लिए हम सभी को अधिकाधिक प्रयत्न करने होंगे। सम्भव हो तो शासन के पूर्ण सहयोग से कार्यक्रम कराना उचित होगा। अन्यथा आर्य जन एवं सभा अपने बलबुते पर समारोह करने की तैयारी में जुट जाए।

सोत्साह सम्पन्न हुआ 'पुरोहित शिबिर'

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 'राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर' आर्य समाज गान्धीचौक, लातुर में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। गत २ से ८ जुलाई के दौरान लातूर के भक्तिनगर तथा गान्धी चौक इन दो आर्य समाजों के पूर्ण सहयोग से आयोजित इस शिविर में लगभग ३५ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रमुख मार्गदर्शक एवं प्रशिक्षक के रुप में वैदिक १६ संस्कारों मर्मज्ञ आर्य विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री आमन्त्रित थे। साथ ही सहप्रशिक्षक के रुप में विद्वान सर्वश्री डॉ.वीरेन्द्रजी शास्त्री, डॉ.अरुणजी चव्हाण, पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, प्रा.चन्द्रेश्वरजी शास्त्री, प्रा.सोमदेवजी शिन्दे-शास्त्री, डॉ.नयनकुमारजी आचार्य आदियों विभिन्न संस्कारों स्वरुप एवं विधियों को उत्कृष्ट ढंग से समझाया, जिससे प्रशिक्षणार्थी सन्तुष्ट हुए।

शिविर का समापन महाराष्ट्र सभा के मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें प्रमुखातिथि के रुप में पूर्व विधायक श्री शिवाजीराव पाटिल कव्हेकर उपस्थित रहें। उन्होंने बिगडती सद्य परिस्थिति में वैदिक संस्कारों की प्रासंगिकता व प्रचार-प्रसार की आवश्यकता जताईं। इस अवसर पर श्री विज्ञानमुनिजी, समाज के मन्त्री प्रा.शरदचन्द्रजी डुमणे, सभामंत्री श्री दिवे, पं.राजवीरजी शास्त्री ने भी विचार व्यक्त किये, प्रास्ताविक भाषण डॉ.नयनकुमार आचार्य ने रखा। राज्य के आर्य वीरदल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे ने

शिविर की भूमिका विशद की। संचालन श्री दिगम्बरजी रिद्दीवाडे एवं श्री कानगुले सर ने किया। कुछ प्रशिक्षणार्थियों ने भी अपने अनुभव कथन किये और युवक-युवतियों ने योगासन भी प्रस्तुत किये। मान्यवरों के करकमलों से प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्रों व वैदिक साहित्य का वितरण किया गया। इस शिविर की सफलता में श्री व्यंकटेशजी हालिंगे, ॲड.विजय कुमार सलगरे, दिगम्बर रिद्दीवाडे आदियों की विशेष सक्रिय भूमिका रही।

ठा.विक्रमसिंहजी का १९ सितम्बर को अभिनन्दन

आर्य जगत् के दानशूर व्यक्तित्त्व एवं महर्षि दयानन्द के प्रखर अनुयायी आर्यरत्न ठाकुर विक्रमसिंहजी इस वर्ष अपने जीवन के ८० वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में उनके सेवाभावी, प्रेरक जीवनकार्य का गौरव हो, इस उद्देश्य से आगामी १९ सितम्बर २०२३ को नई दिल्ली में उनके भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन हो रहा है। हाल ही में दिल्ली में सम्पन्न आर्यनेताओं व विद्वज्जनों की बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस निमित्त से ठा.विक्रमसिंहजी का अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित होने जा रहा है। इसके लिए आर्यजनों, लेखकों, विद्वानों, आचार्यो, मनीषियों से निवेदन है कि वे विक्रमसिंहजी के सम्बन्ध में संस्मरण लिखकर उन्हीं के कार्यालयीन पते पर भेजें। समारोह के आयोजन अथवा अभिनन्दन ग्रन्थ के विषय में अधिक जानकारी हेतु डॉ.आनन्दकुमार IPS-R से ९८१०७६४७९५ पर सम्पर्क करें।

राज्य में बहेगी वेदज्ञानगंगा

प्रतिवर्ष की भांति इसवर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में श्रावणी वेदप्रचार, उपाकर्म पर्व का बडी धूमधाम के साथ आयोजन हो रहा है। आगामी दि.१७ अगस्त से १४ सितम्बर तक चलनेवाले इस बृहतर वेदप्रचार अभियान का कार्यक्रम छप चुका है, जो कि समाजमाध्यम (वॉटस्अप) और डाक द्वारा भी सभी विद्वानों व आर्य समाजों तक भेजा गया है। इस वर्ष सभा अन्तर्गत लगभग ११८ आर्य समाजों को कार्यक्रम

दिये गये है। इन सभी आर्य समाजों में लगभग ६८ विद्वान व भजनोपदेशक पहुंचकर वेदधर्म का प्रचार करेंगें। प्रस्तुत व्यापक श्रावणी वेदप्रचार अभियान के लिए उत्तर भारत से लब्धप्रतिष्ठ पांच वैदिक विद्वानों तथा पाँच आर्य भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। साथ ही मराठी भाषा में प्रचार करनेवाले विद्वानों, भजनोपदेशकों व कार्यकर्त्ताओं द्वारा वेदप्रचार होगा।

– आर्य समाजों से निवेदन–

सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि, वे अपनी समाजों के श्रावणी वेदप्रचार उत्तम प्रकार से मनावें! प्रेषित किए गये विद्वानों का सम्यक रुपेण आदरातिथ्य करें। निर्धारित कार्यक्रम के साथ ही स्कूल व कॉलेजों में भी विद्वानों के व्याख्यान रखें। इसके लिए अभी से उनसे सम्पर्क करें! कार्यक्रमों के विज्ञापन पत्र छपवाकर अधिकाधिक प्रसार करें।

*** शोक समाचार ***

जयकिशोरजी दोडिया को पितृशोक

आर्य समाज परली के सक्रिय सदस्य एवं दानशूर सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री जयकिशोरजी दोडिया के पिताश्री एवं सेलू (जि.परभणी) के ज्येष्ठ प्रतिष्ठित व्यापारी श्री हरिप्रसादजी मदनलालजी दोडिया का गत २२ मई २०२३ को प्रातः १०.३५ बजे वार्धक्यावस्था से देहावसान हुआ। उनकी आयु ९७ वर्ष की थी। वे अपने पश्चात् धर्मपत्नी श्रीमती रुक्मिणीदेवी, तीन पुत्र सर्वश्री जयकिशोरजी, रामेश्वरजी, एड्. गोपालजी, कन्या सौ.कौशल्यादेवी मंत्री (मानवत), बहुएं, दामाद, पौत्र-पौत्रियां, दौहित्र-दौहित्रियां तथा प्रपौत्रादि विशाल परिवार को छोड संसार से विदा हो गये।

स्व.श्री हरिप्रसादजी की प्रदीर्घ जीवनयात्रा कडे संघर्ष, अथक परिश्रम एवं पुरुषार्थ में बीत गयी। अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारित एवं कर्मशील बनाने में वे सदैव अग्रसर रहे। सेलू परिसर में वे एक मिलनसार, मितभाषी, धर्मनिष्ठ, सुशील एवं सभ्य सद्गृहस्थ के रुप में पहचाने जाते थे। आज उनके पुत्र अपने पिता के धरोहररुप विचार व कार्यों को आगे बढाने में संलग्न है। उनके परलीस्थित सुपुत्र श्री जयकिशोरजी ने अपने पूज्य पिताजी व

माताजी के गौरव में आर्य समाज परली में लगभग १० वर्ष पूर्व भव्य यज्ञशाला बनवाई है। सही अर्थों में उनका यह स्थायी स्मारक है। ऐसे आदर्श व्यक्तित्त्व का जीवनकार्य नयी पीढी को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

नवलकिशोरजी टावरी को मातृशोक

विदर्भ म.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं आर्य समाज अकोला के मन्त्री श्री नवलकिशोरजी टावरी की माताजी श्रीमती राजकंवरदेवी नारायणदासजी टावरी का दि.२५ जुलाई २०२३ को सायंकाल वार्धक्यकालीन रुग्णावस्था के कारण उनके निजी ग्राम हिवरखेड में दुःखद निधन हो गया। वे ८९ वर्ष की थे। उनके पश्चात् श्री नवलकिशोरजी एवं सतीशजी समेत चार पुत्र व दो कन्या, दामाद, पुत्रवधुएं तथा पौत्र-पौत्रियां, दौहित्र-दौहित्रियां आदि विशाल परिवार है। माता श्रीमती राजकंवरदेवी पुरानी पीढी की एक विचारशील, धार्मिक, कर्मठ व अनुशासनप्रिय महिला थी। आर्य समाज के प्रति उनहें आस्था व लगन थी। प्रतिदिन यज्ञ करनेवाली माताजी विद्वानों के आदरातिथ्य में आगे रहती थी। वैदिक धर्म के प्रचार हेतु उन्होंने हिवरखेड शहर के मध्यवर्ती स्थान में यज्ञशाला के निर्माण के लिए टावरी परिवार की ओर से ७०० स्क्वेअर फीट भूमि दान में दे दी, जहांपर आठ माह पूर्व 'योगेश्वर श्रीकृष्ण यज्ञशाला' का निर्माण हुआ। इसका उद्घाटन वैदिक विदुषी आचार्या डॉ.सविताजी (हैदराबाद) के शुभ करकमलों से संपन्न हुआ। माताजी माहेश्वर महिला समाज की भी सक्रिय कार्यकर्त्री रही है। घर-परिवार को विद्याविभूषित, संस्कारशील एवं आर्थिक दृष्टि से सुसम्पन्न बनाने इन्होंने सराहनीय भूमिका निभाई है।

श्रीमती राजकंवरदेवी के पार्थिव शरीर पर दूसरे दिन पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। पथरोट एवं अकोला से पधारे वैदिक पण्डितों ने यह अन्त्येष्टि सम्पन्न करायी।

उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति व सद्गति हेतु प्रार्थना!
उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाजन्लियाँ व शोकसंतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं..!

आर्य समाज की पहल
सुशील राज
आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
देश के प्रतिभावान प्रतिभागियों के साथ परीक्षा की तैयारी का अवसर
दिनांक 24 अगस्त 2023 11:00 पूर्वाह्न
नि:शुल्क
आज ही रजिस्टर करें
प्रमुख सुविधाएं
मार्गदर्शन
रहना
शिक्षण
खाना
इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि - 18 अगस्त 2023
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (रजि०)

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय

जीवन मूल्यों को

जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एफ. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)९६७/१०४९.

स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. मसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* महर्षी मनुंचा उपदेश *

वेदाभ्यास न केल्याने शूद्रत्व !

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।। (मनुस्मृती-२/१६८)

अर्थ – जो कोणी वेदांचे अध्ययन करण्याऐवजी दुसऱ्याच गोष्टीसाठी श्रम करतो, तो लवकरच आपल्या मुलाबाळांसह (कुटुंबासह) शूद्रत्वास प्राप्त होतो.

विशेष – ज्ञानी व विद्वान अशा (गुण, कर्म स्वभावी) ब्राह्मण लोकांनी नेहमी वेदाध्ययनात, वैदिक शास्त्रांच्या अभ्यासात आपला वेळ घालवावा. इकडे-तिकडे व्यर्थपणे अनिष्ट कार्यात वेळ घालवल्याने त्याचे ब्राह्मणत्व नष्ट होते. तसेच तो आपल्या कुटुंबासह लवकरच विविध अनर्थांना, संकटांना व दुःखांना प्राप्त होतो. म्हणजेच ज्ञानवंत विद्वानांनी नेहमी वैदिक ग्रंथांचे श्रद्धापूर्वक अध्ययन करीत राहावे व आपले जीवन मंगलमय बनवावे..!

* दयानंद वाणी *

खरा तो एकची 'वैदिक धर्म'

ब्रह्मदेवापासून जैमिनी महर्षीपर्यंत होऊन गेलेल्या विद्वानांचे असे मत आहे की, जे काही वेदांविरुद्ध असेल ते मान्य न करणे आणि जे वेदानुकूल असेल त्याचे आचरण करणे, हाच खरा धर्म होय. का? कारण वेद हे सत्य अर्थांचे (धर्मांचे) प्रतिपादक आहेत. याविरुद्ध जे तंत्रग्रंथ व पुराणग्रंथ आहेत, ते सर्व वेदविरुद्ध असल्याने खोटे आहेत. त्यांमध्ये सांगितलेली मूर्तिपूजाही अधर्मरुप आहे. माणसांचे ज्ञान जड (अचेतन) पदार्थांची पूजा केल्याने वाढत नाही. किंबहुना जे काही ज्ञान असते, ते ही जडपूजनाने नष्ट होऊन जाते. ज्ञानी लोकांची सेवा व सत्संग केल्याने ज्ञान वाढते. पाषाणादिकांच्या मूर्तींची सेवा करून ते वाढत नाही.

(सत्यार्थ प्रकाश-११ वा समुल्लास)

वेदवाङ्‌मयातील काव्यशास्त्रीय तत्त्वे

– प्रा.सोमदेव शिंदे(शास्त्री)

वेद सर्व प्रकारच्या ज्ञानाचे आहेत. 'सर्वज्ञानमयो हि सः' असे म्हणून महर्षी मनूंनी मनुस्मृती या ग्रंथात वेदांचे सर्वज्ञाननिधित्व स्वीकारले आहे. वेदांमध्ये मूळरुपाने सर्व विद्या असल्याचे महर्षी दयानंदांचे देखील प्रतिपादन आहे. दर्शन, राजनीती, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, अध्यात्म, मनोविज्ञान, आयुर्वेद, गणीत, नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र इत्यादी अनेक ज्ञानशाखांचा त्यात मूलरुपाने उल्लेख झालेला आहे.

जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात्
सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

(नाट्यशास्त्र १-१७)

भरतमुनीच्या नाट्यशास्त्रातील हा उल्लेख वेदांचे सर्वज्ञानमयत्व सिद्ध करतो. भाषा ही प्रथम येते व नंतर व्याकरण. त्याप्रमाणे प्रथम सात्यि व त्यानंतर साहित्यशास्त्र. काव्यनिर्मिती, काव्यास्वाद व काव्यचिकित्सा हा क्रम साहित्याविषयी लागू पडतो. भारतातील काव्यनिर्मितीची परंपरा प्राचीन काळापासून आढळते. संस्कृतवाङ्मयाचे उगमस्थान वेदांना मानले तर काव्यनिर्मितीचा आरंभही तेथूनच झाला असे मानावयास हरकत नाही. रामायण, महाभारत यांसारख्या आर्ष काव्यांमध्ये संस्कृत काव्याची वाढ होऊन नंतर काव्ये, नाटके, महाकाव्ये इत्यादी अभिजात वाङ्मयाचे प्रकार निर्माण झाल्याचे दिसते. काव्यास्वादाचा शास्त्रीय अभ्यास सर्वप्रथम भरतमुनींनी नाट्यशास्त्रात मांडला. भरतमुनीचे हे नाट्यशास्त्र ख्रिस्तपूर्व पहिल्या-दुसऱ्या शतकातील बनलेले असले तरी त्याची मूळ आधारभूत नाट्यसूत्रे त्याहून प्राचीन असली पाहिजेत, असे दिसते.

ऋग्वेदातील काव्यात प्रत्यक्ष रसचर्चा नसली तरी रसाविष्कार आहे. ऋग्वेदातील प्राचीन ऋषींच्या मुखांतून झालेला हा रसाविर्भाव त्याच्या सहजतेमुळे व साधेपणामुळे अतिशय मनोहर झाला आहे. इंद्र व घूतसूक्तामध्ये करुणरस, मंडूकसूक्तात हास्यरस, देवतांच्या प्रार्थनात व स्तुतीत भक्तिरस इत्यादी रस ऋग्वेद संहितेत आढळतात.

'जायेव पत्ये उशती सुवासा।
उषत्तहस्रेव नि रिणीते अप्सः।।'

(ऋ.१-१२४-७)

'कामुक स्त्री पतीपुढे सुंदर वस्त्र नेसून हसत येते. त्याप्रमोण उषा आपले

रुप प्रकट करते.' यासारख्या शृंगाररसप्रधान व 'उशतीरिव मातरः' (ऋ१०/९/२)यासारख्या वात्सल्यरसयुक्त अनेक उपमा ऋग्वेदात ठिकठिकाणी आढळतात. ऋग्वेदातील पावमानीसूक्तात ऋषींच्या मनाला वाणीचे महत्त्व पटले.

'यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।'

(ऋ.९-६७-३१)

'ऋषींनी संपादित व वेदांचा सारभूत असा हा जो रस (पामानी सूक्त) सेवन करतो तो वायूने गोड केलेले अन्न भक्षण करतो.' या ठिकाणी काव्यास्वादाच्या आनंदाचे फळ ध्वनित केले आहे.

ऋग्वेदातील छंदाच्या उल्लेखावरुन काव्याच्या बाह्यांगाचे महत्त्व तत्कालीन ऋषींच्या ध्यानात स्पष्टपणे आले होते असे दिसते. (ऋ.१-१६४-२५) यात 'जगती'चे महत्त्व सांगितले आहे. त्यात द्युलोकातील सिंधु हा अंतरिक्षाशी जगती छंदाने जोडला आहेक असे म्हटले आहे. ऋ.१०-१२४-९ मध्ये अनुष्टुभाची प्रशंसा आढळते. संस्कारयुक्त वाणी काव्यात उपयोजिण्याचे महत्त्व ऋषींच्या मनाला चांगलेच पटले आहे.

'अहं सुराष्ट्री संगमनी वसूनाम्

(ऋ.१०-१२५-३ ते ५)

सक्तुमिव तिडना पुनन्तो

(ऋ.१०-७१-२)

ऋग्वेदातील दहाव्या मंडळातील १०३ क्रमांकाचे संपूर्ण सूक्त वीरसकाव्याचे उत्तम उदाहरण आहे.

अलंकारतत्त्व –

काव्यशास्त्रकारांनी अनुप्रास, यमक इत्यादी शब्दलंकार व उपमा रुपक, उत्प्रेक्षा इत्यादी अर्थालंकारांची कल्पना केलेली दिसत असली तरी ही कल्पना वाल्मीकी, व्यास, भास, कालिदास इत्यादी काव्यधुरीणांच्या काव्यरचनेच्या अभ्यासातून निर्माण झाली आहे. पण लौकिक काव्यापूर्वीच वेदसंहितांमध्ये तसेच त्यानंतरच्या ब्रहामण, आरण्यक, उपनिषद इत्यादी वैदिक वाङ्मयात अलंकारांचा प्रयोग झाल्याचे अनेक दाखले सापडतात. म्हणून काव्यालंकारांचे मूळ देखील वाङ्मयात आढळते असे म्हणावयास हरकत नाही.

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो
घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं
सेना अजयत् साकमिन्द्रः।।

(ऋ.१०-१०३-१)

या मंत्रात 'श' या अक्षराची आवृत्ती अनेकवेळा आली असल्याने 'वृत्त्यनुप्रास' अलंकार दिसत आहे. 'वृषभ इव क्षोभणः' यात उपमालंकार

आला आहे. अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार म्हणून काव्यशास्त्रात ज्याचा उल्लेख झाला आहे, त्यासारखेच काव्य ऋग्वेदात देखील आले आहे.

सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो
भिचाकशीति।। (ऋ.१-१६४-२०)

परस्पर सहकार्य करणारे, एकमेकांचे मित्र असलेले, दोन सुंदर पंख असलेले पक्षी एकाच झाडावर बसले आहेत. त्यापैकी एक जण झाडाचे स्वादिष्ट फळ खात आहे तर दुसरा काही न खाता फक्त पाहात आहे. वास्तविकपणे येथे पक्ष्यांचा वृत्तांत अप्रस्तुत आहे. प्रस्तुत आहे परमात्मा, जीवात्मा आणि जगत. परमात्मा व जीवात्मा हे एकमेकांचे सखा आहेत व ते एकाच जगद्रूपी वृक्षावर बसले आहेत. त्यापैकी जीवात्मा जगाच्या स्वादिष्ट फळांचा आस्वाद घेत आहे तर परमात्मा फक्त साक्षीदार आहे.

यासारख्या अनेक मंत्रांमधून अप्रस्तुत अलंकार दृष्टीस पडतो. यावरुन असे म्हणता येईल की सांप्रत काळात जो अलंकारशास्त्राचा महावृक्ष अस्तित्वात आला आहे त्याचे बीज वेदवाङ्मयातच रुजलेले दिसते.

- संस्कृत विभाग,
रा.शाहू महाविद्यालय, लातूर

***

प्रेरक व्यक्तिमत्त्व-पं.अनिल आर्य

धर्माबाद येथील महर्षी दयानंद यांचे सच्चे अनुयायी व आर्य समाजाचे सक्रिय पुरोहित पं.श्री अनिल आर्य हे गेल्या २० वर्षांपासून योगप्रचार आणि वैदिक धर्मप्रचार या कार्यात तन, मन, धनाने प्रयत्नशील आहेत. सामान्य लोकांत योगाचे खरे स्वरूप पटवून देणे व म.दयानंद प्रतिपादित सत्य वैदिक ज्ञानाचे बीजारोपण करून लोकजागृती करणे, यासाठी ते अत्यंत उत्साहाने प्रयत्न करीत आहेत.ठिकठिकाणी पारिवारिक सत्संग, कुटुंबात विविध संस्कार, शाळा महाविद्यालयात व्याख्याने तसेच योग प्रशिक्षण शिबिरे इत्यादी कार्यक्रमांद्वारे ते आर्य समाजाचा प्रचार करतात. यजमानांना स्वतः 'सत्यार्थ प्रकाश' हा ग्रंथ भेट देतात. त्याचबरोबर अंधश्रद्धा, बुवाबाजी, रूढी परंपरा, विविध चालीरीती, व्यसनाधीनता यांच्या निर्मुलनासाठी प्रयत्न करतात. अशा योग व वेदधर्म प्रचार कार्यात तत्पर असलेले पं.अनिल आर्य यांचे हार्दिक अभिनंदन व शुभेच्छा!

महाराष्ट्र- समाज सुधारणा व आर्य समाज

– प्रा.साईनाथ पुन्ने (पुणे)

समाज व धर्म–सुधारणावादी परिवार

'१८५३ च्या एप्रिल महिन्यात आगगाडी सुरु झाली. पुण्यापासून खंडाळ्याच्या घाटापर्यंत १८५९ मध्ये आगगाड्यांची रहदारी होऊ लागली. १८६२ मध्ये खंडाळ्याच्या घाटातला रस्ता आगगाड्यांच्या व्यवहाराकरिता बांधून पूर्णपणे तयार झाला. आगगाड्यांनी जातिश्रेष्ठतेला हळूहळू चिरडण्यास प्रांरभ केला.' (पृ.७३, न.रा.फाटक, रानडे चरित्र). ब्रिटनच्या राणीचे राज्य आल्यानंतर व रेल्वे सुरु झाल्यानंतरच्या विज्ञाननिष्ठ धर्म व समाज–सुधारणावादी संस्थेचा परिवार निर्माण झाला. १८६७ च्या मार्च ३१ तारखेला मुंबईत रविवारी 'प्रार्थना समाज' स्थापन झाला. पुण्यात प्रार्थना समाज ४ डिसेंबर १८७० रोजी स्थापन झाला. म.फुले यांनी पुण्यात 'सत्यशोधक समाज' २७ सप्टेंबर १८७३ रोजी स्थापन केला. मुंबईत १० एप्रिल १८७५ रोजी महर्षी दयानंदांनी 'आर्य समाज' स्थापन केला. या तिन्ही धर्म व समाज–सुधारणावादी संस्थांचा परस्पर संबंध महर्षी दयानंदांच्या पुण्यातील अडीच महिन्यांच्या वास्तव्यकाळात आला. महाराष्ट्रात या समाज–सुधारणावादी चळवळी निर्माण झाल्या व अजूनही टिकून आहेत. महर्षी रेल्वेने पुण्यात आले. त्यात पुण्यातील ४ डिसेंबर १८७० रोजी स्थापित 'पुणे प्रार्थना समाजा'ची नुकतीच दीडशे वर्षे पूर्ण झाली. नंतरच्या काळात मुंबईत 'आर्य प्रतिनिधी सभा' नावाने आर्य समाजाचे जाळे निर्माण झाले. पुणे जिल्ह्यात हे कमी प्रमाणात आहे, पण प्रार्थना समाजापेक्षा पुण्यात आर्य समाजाचेच वर्चस्व व विस्तार अजूनही मोठ्या प्रमाणात पुणे, खडकी, पिंपरी परिसरात टिकून आहे. राजर्षी शाहूंनी आर्य समाजाच्या प्रसारासाठी स्वतः १९१८ साली पुण्यातील नानापेठेमध्ये जागा दान केली होती. राजर्षी शाहूंनी सामाजिक चळवळी वाढवण्यास प्रार्थना व सत्यशोधक समाजास साहाय्य केले आहे. या तीनही सुधारणावादी विचार–प्रवाहांस धर्म व समाज सुधारणावादी परिवार म्हणून या लेखात संबोधले आहे. त्यांचे ऐक्य ही पुण्याच्या जडणघडणीतील एक अद्भुत ऐतिहासिक घटना आहे. पुण्यात प्रार्थना

व सत्यशोधक समाजाची प्रचाराची व्यासपीठीय भाषा मराठी, तर आर्यसमाजाची हिंदी राहिली आहे. प्रार्थना समाजाचे लिखाण इंग्रजी भाषेत-रोमन लिपीत देखील आहे. तर सत्यशोधक व आर्य समाजाचे लेखन, प्रचारासाठी स्वदेशी भाषा देवनागरी लिपीचा वापर जास्त प्रमाणात झाला आहे. १९०० च्या आधीच्या धर्मसुधारणांना हिंदुत्ववादी लेखक इंग्रजधार्जिणे मानतात, तो पुण्यातील सुधारणावादी परंपरेचा अपमान आहे. महर्षी दयानंद व आर्य समाज त्याच काळात झाले. म्हणून त्यांनाही इंग्रजधार्जिणे म्हणायचे का? पंजाब व बंगालच्या क्रांतिकारी चळवळीने महाराष्ट्रासारखा आरोप आपल्या सुधारक-परंपरेवर कधी केला नाही. सगळ्यांच्या प्रांरभीच्या नियमावलीत कोठेही, कसल्याही इंग्रजीधार्जिणेपणाचा, राजनिष्ठेचा उल्लेख येत नाही. त्यांची नियमावली खाली दिलेली आहे. महर्षी दयानंदांनी २० जून ते ५ सप्टेंबर १८७५ या कालावधीत पुणे येथील जगन्नाथ शंकरशेठ वाड्यातील वास्तव्यात या दोन्ही संस्थांशी हिंदीमध्ये संवाद साधला.

१८८० मध्ये दक्षिण भारतातील पहिला व महाराष्ट्रातील दुसरा आर्य समाज हा किल्ले धारुर येथील गोकुळप्रसाद तिवारी यांनी स्थापन केला. त्यांनी महर्षी दयानंदांची पुण्यातील प्रवचन ऐकली व प्रभावित होऊन निजाम-स्टेटमधील धारुर(मराठवाडा) इथे आर्य समाजाची स्थापना केली. गरुकुलाचीही नंतर तेथे स्थापना झाली होती. धारुरात त्यांचे नातू श्री प्रमोदकुमार तिवारी सध्या तेथील आर्य समाजाचे प्रधान आहेत. ते स्वतः महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपप्रधान देखील आहेत. त्यांच्या आजोबांनी बैलगाडीने कुर्डूवाडीपर्यंत व तेथून रेल्वेने पुण्याचा प्रवास केला व व्याख्यानाला आले होते. लातूर, नांदेड इत्यादी मराठवाड्यातील ठिकाणांमध्ये आजदेखील महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे केंद्र आहे. जेथून महाराष्ट्राच्या जुन्या-नवीन आर्य समाजाची नोंद घेऊन परस्पर संबंध ठेवला जातो. मुंबईचा पहिला व नंतर टिकलेला महाराष्ट्रातील दुसरा धारुरचा आर्य समाज आहे. कारण मा.गो.रानडेंनी देखील १८७५ मध्ये दोनदा पुण्यात आर्य समाज स्थापन केला व प्रार्थना समाजाच्या सदस्यांनाच तात्पुरते आर्य समाजाचे सदस्य बनविले, पण तो न टिकल्याने पुण्यातल्या आर्य समाजाला दुसऱ्या आर्य समाजाचा दर्जा मिळू शकत नाही. त्याबाबत चिपळूणकरांचा नोव्हेंबर

१८७५ च्या निबंधमालेतील २३ व्या अंकातील तळटीप वाचू शकता. रानडेंच्या काळात नाशिकमध्येही १८८८ मध्ये एक आर्य समाज होता, जेथे रानडेंनी 'आर्य' शब्दावर व्याख्यान दिले होते. (पृ.२७२, 'रानडे चरित्र', न.र.फाटक)

आर्य समाजाचे योगदान –

लोकहितवादी मुंबई काकडवाडी आर्य समाजाचे तेरा वर्षे प्रधान (१८७९ ते १८९२) होते व त्यांची सर्व मुले मुंबई आर्य समाजाशी जोडलेली होती व सदस्यही होते. त्यांचा एक मुलगा मोरेश्वर गो.देशमुख हा ग्रांट मेडिकल कॉलेजचा मॅट्रिक्युलेट विद्यार्थी (६४ क्रमांक) होता व दुसरा मुलगा रघुनाथ गो.देशमुख हा बी.ए. झालेला ट्रान्सलेटर (६५ क्रमांक) विद्यार्थी होता. मुंबई आर्य समाजाचे प्रारंभिक ९६ सदस्यांची व वेदभाष्याचे ग्राहक नावांपैकी आहेत. (पृ.२८६ ते २९३, डा.कुशलदेव शास्त्री)

(क्रमशः) (मो.८८८८४७००१४)

पू.आनंदमुनिजी (चिल्ले) यांचा प्रेरक उपक्रम

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील स्वा.सै. व महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेचे संरक्षक पू.श्री आनंदमुनिजी उर्फ श्री मन्मथअप्पा चिल्ले हे गेल्या २३ वर्षांपासून आपल्या करडखेल (ता.उदगीर जि.लातूर) गावातील दोन शाळांमध्ये 'गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार' हा प्रेरणादायी उपक्रम राबवितात. दरवर्षी गावातील आर्य समाजात साजऱ्या होणाऱ्या श्रावणी वेदप्रचार उत्सवादरम्यान हा कार्यक्रम पार पडतो.

श्रावणीनिमित्त सभेतर्फे पाठविल्या जाणाऱ्या विद्वानांचे भजन व प्रवचन शाळेत आयोजित होते व त्याच कार्यक्रमात विद्वानांच्या शुभहस्ते शाळेतील गुणवंत विद्यार्थ्यांना वह्या-पुस्तके, पेन इ. शालेय साहित्य देऊन त्यांचा सत्कार केला जातो. विशेष म्हणजे या साहित्यासाठी लागणारी दीड ते दोन हजाराची रक्कम श्री मुनिजी हे स्वतः व्यक्तिगत रुपाने खर्च करतात. गावातील जि.प.हायस्कूल व मिलिंद माध्यमिक विद्यालय या दोन शाळांमध्ये श्री मुनिजींच्या प्रेरणादायी या शालेय साहित्य वितरणाचा उपक्रम इ.स.2000 पासून सातत्याने सुरु आहे. त्यांच्या या कार्यापासून इतरही गावातील आर्यजनांनी बोध घेत त्यांचे अनुकरण केले, तर निश्चितच होतकरू विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणास चालना मिळेल. यानिमित्त पू.श्रीमुनिजींचे हार्दिक अभिनंदन व अभीष्ट चिंतन!

वर्षाकालीन ऋतुचर्या

- वैद्य विज्ञानमुनी

वर्षाऋतुचा कालावधी श्रावण-भाद्रपद (ऑगष्ट-सप्टेंबर) आहे. या ऋतुतील रोग म्हणजे भूक कमी लागणे, सांधे दुःखी, सूज, खाज, फोड, फुन्सी, पोटात जंत होणे, डोळे येणे, मलेरिया(हिवताप), टायफाइड, संडास बसवणे असे अनेक प्रकारचे आहेत.

*** पथ्य आहार-विहार** (काय खावे?)

पावसाळ्यामध्ये भूक मंदावते. त्यामुळे भोजनात अंबटपणा, स्नेहयुक्त म्हणजे तेल, तुपाने युक्त असे बनवलेले भोजन, धान्यात गहू, ज्वारी, जवा, दूध, तूप खाण्यात यावे. अर्थात भाकरी, चपाती, दाळ व भाज्यामध्ये भोपळा, पडवळ, कारले, दोडकी, अद्रक, जिरे, मेथी, लसून हे आहारात असावे. पाणी हे शुद्ध व उकळलेले उपयोगात आणावे. स्वच्छ पाणी खरेदी घेणे होत नसल्यास रोज तुरटी फिरवल्यास पाण्यातील घाण मळ खाली बसते, ते पाणी गाळून पिण्यास उत्तम असते. या काळात पावसात भिजू नये. जर भिजले तर लगेच वाळलेले कपडे वापरावे. अणवानी पायानी फिरु नये. ओल्या मातीत चिखलात जाऊ फिरु नये. बाहेरून आल्यानंतर हात पाय चांगल्या तऱ्हेने धुऊन पुसून घ्यावे. पावसाळ्यात तेलाची मॉलीस करणे हिताचे असते. डासापासून बचावासाठी रात्री मच्छरदानीचा उपयोग करावा.

*** अपथ्य आहार-विहार -**

आलू, अरवी, भेंडी, तसेच पचण्यास जड असलेले अन्न, पोहे, मैद्याचे पदार्थ, शीळे पदार्थ, दही, मांस, मासे, जास्त तळलेले पदार्थ, दारु इत्यादीचे घेणे-खाणे फायद्याचे नाही. तसेच तळ्याचे-नदीचे पाणी पिऊ नये.

दिवसा झोपू नये, रात्री जागू नये, खुल्या मैदानात झोपू नये, अधिक व्यायाम करू नये, खूप श्रम, माहिती नसलेल्या नदीत-जलाशयात पोहू नये. जो अजीर्ण किंवा सर्दी पडशांनी ग्रासलेला आहे व ज्याने जुलाब घेतलेला आहे, त्यांनी अधिक तेलाची अधिक लावल्यास स्वास्थ्य बिघडते. (वागभट्ट) त्रिफळा, तीन त्रिकुट, तीन लिंबू, गुर्ज, अदरक आणि मध हे अमृत आहेत.

दिनचर्येमध्ये ५ वा.उठून ताम्रपात्रातील पाणी प्यावे. शौचानंतर भ्रमण करावे. होईल तितका साधारण व्यायाम, प्राणायाम करणे हे सारे वागणे हिताचे होईल. **(मो.९६९९७२०१०९)**

अकोला येथे २४ मुला-मुलींचे सामूहिक उपनयन

अकोला येथील आर्य समाज व म.दयानंद अँग्लो वैदिक विद्यालयाच्या संयुक्त विद्यमाने दि.३० जून रोजी भव्य स्वरुपात सामूहिक उपनयन संस्कार पार पडला. आर्य समाजाच्या प्रेरणेने जिज्ञासू कार्यकर्त्यांनी स्वेच्छेने आपल्या मुला-मुलींचे, तर शाळेतील कांही विद्यार्थ्यांचे असे एकून २४ बालकांचे उपनयन संपन्न झाले. आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी व शाळेच्या शिक्षक-शिक्षिकांनी प्रयत्नपुर्वक कार्यक्रमाचे सुंदर नियोजन केले होते. शाळेच्या सभागृहात पार पडलेल्या या जाहिर उपनयन संस्काराचे पौरोहित्य परळी येथील विद्वान प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले.

याकरिता जवळपास १२ हवनकुंडांची रचना करण्यात येऊन त्या-त्या पालकांसह ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी श्वेतवस्त्रांमध्ये यज्ञवेदीवर विराजमान झाल्या होत्या. या उपनयन संस्कार समारंभाचे संयोजन प्रा.डॉ.वेदांजली काळे-सानप यांनी केले, तर हा कार्यक्रम पूर्णांशाने यशस्वी करण्यासाठी अकोला आर्य समाजाचे प्रधान श्री जयसिंहजी जव्हेरी, मंत्री नवलकिशोरजी टावरी, कोषाध्यक्ष यतीन्द्र चौरसे, शाळेचे अधीक्षक अजय डोंगरे, मु.अ गणेश लांडे, सत्यानंदजी बाहेती, नाकर सर, सौ.निशा टावरी, सौ.जव्हेरी यांनी विशेष प्रयत्न केले. या सर्वांना वरिष्ठ संरक्षक डॉ.हुकुमसिंह आर्य, डॉ.वसंतराव काळे, उपप्रधान मधुकरराव गित्ते व रमेशजी घारु यांनी मार्गदर्शन केले. यानंतर सायंकाळी ४ वा. आर्य समाज व ज्येष्ठ नागरिक संघाच्या संयुक्त विद्यमाने डॉ.नयनकुमार आचार्य यांचे **'वैदिक संस्कृतीचे विशुद्ध स्वरुप, महत्त्व व गरज'** या विषयावर व्याख्यान पार पडले.

महर्षी दयानंदांनी भारतीयांना स्वाभिमान शिकवला

- दै.सकाळचे संपादक दयानंद माने

प्रबोधनयुगातील थोर समाजसुधारक महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी पुनश्च वेदज्ञानाचे विशुद्ध विचार प्रसारित करून समस्त मानव समुहावर अनंत उपकार केले आहेत. प्राचीन सभ्यता, संस्कृती व आत्माभिमान यांचा विसर पडलेल्या भारतीयांना स्वाभिमान शिकवला, असे प्रतिपादन दै.सकाळच्या मराठवाडा आवृत्तीचे संपादक श्री दयानंद माने यांनी केले. श्री माने हे आर्य समाज संभाजीनगर येथे दि.२५ जून रोजी आयोजित महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेच्या एका छोटेखानी कार्यक्रमात बोलत होते. यावेळी त्यांचा शाल, पुष्पहार, ग्रंथसंपदा भेट देऊन सत्कार करण्यात आला. ते म्हणाले-'स्वामी दयानंदांचे विचार हे सद्ययुगात फारच उपयुक्त आहेत. विद्यार्थीदशेपासूनच माझ्यावर आर्य समाजाचे संस्कार झाले आहेत. सोलापुर येथे कार्यरत असतांना तेथील दयानंद महाविद्यालय व आर्य समाजांशी संपर्क आला. तेव्हा बऱ्याच प्रमाणात या विचारांशी जवळीक आली. याप्रसंगी सभेचे कार्यकारी प्रधान श्री माधवराव देशपांडे व उपप्रधान श्री दयाराम बसैये यांनीही विचार मांडले. कार्यक्रमाचे संयोजन डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले.

हिंगोलीत आर्य समाजातर्फे रक्तदान शिबीर

थोर समाज सुधारक व आर्य समाजाचे संस्थापक, वेदोद्धारक महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या २०० व्या जन्मशताब्दीचे औचित्य साधून हिंगोली येथील आर्य समाज व दयानंद एज्यूकेशन सोसायटी यांच्या संयुक्त विद्यमाने नुकतेच भव्य स्वरूपात रक्तदान शिबिर पार पडले. रक्तदानाचे महत्व व

त्याची कमतरता समजून या शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते .

भारतीय संस्कृतीचे संवाहक व समाजात प्रचलित अनेक अंधरूढी परंपरा व अज्ञानरूपी अंध:काराना समूळ निवारण करणारे , थोर समाजसुधारक महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या २०० व्या जयंती वर्षाचे उद्घाटन नवी दिल्ली येथे मागील सहा महिन्यापूर्वी देशाचे पंतप्रधान श्री नरेंद्रजी मोदी यांच्या शुभहस्ते पार पडले. तेव्हापासून देशात सर्वत्र कार्यक्रमांचे आयोजन होत आहे. हिंगोलीचे रक्तदान शिबिर हा देखील द्विशताब्दी कार्यक्रमाचा एक भाग आहे . याही पुढे संस्थेतर्फे यावर्षी विविध उपक्रम राबवण्यात येणार आहेत. या रक्तदान शिबिराचे उद्घाटन हिंगोली मतदार संघाचे लोकप्रिय आमदार श्री . तान्हाजीराव मुटकुळे यांच्या हस्ते झाले. यावेळी त्यांनी रक्तदानाचे महत्व सांगून रक्तदानासाठी प्रेरणा दिली. आर्य समाज हिंगोली चे अध्यक्ष मा.श्री.संतोषजी लदनिया यांनी दयानंद सरस्वती यांच्या समाजोपयोगी कार्यांचा उल्लेख केला. या प्रसंगी दयानंद एज्युकेशन सोसायटी चे सचिव मा. श्री .अनिलजी भारुका यांच्या प्रेरणेने संस्थेतील सर्व शिक्षकांनी व त्यांच्या कुटुंबातील सदस्यांनी स्वयंस्फूर्तीने या समाजोपयोगी कार्यात आनंदाने सहभाग नोंदविला.या वेळी सहभागी सर्व रक्तदात्यांचे मा.श्री.अनिलकुमारजी भारूका यांनी आभार व्यक्त केले.

सुभाषितरसास्वाद...!

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।

अर्थ- जो परस्त्रियांना मातेसमान मानतो, दुसऱ्यांच्या धनांना मातीच्या ढेकळाप्रमाणे समजतो. सर्व प्राणिसमुहांकडे आपल्या आत्म्यासमान पाहतो, तोच खरा पंडित व विद्वान होय.

कृषीमंत्री ना.धनंजय मुंडे यांची गुरुकुलास भेट

सद्यस्थितीत आर्य समाजाच्या विचाराची राष्ट्राला गरज !
सेवेकरी पालक म्हणून गुरुकुलास सर्वतोपरी सहकार्य करणार!

'सध्याच्या परिस्थितीत समाज व राष्ट्राच्या नवनिर्मितीसाठी आर्य समाजाच्या विचारांची मोठ्या प्रमाणात गरज असून परळी आर्य समाजाद्वारे चालविण्यात येणारे श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम हे आगामी काळात प्राचीन आदर्श मूल्यांच्या संवर्धनाचे प्रमुख केंद्र ठरेल. या संस्थेचा कायापालट करण्यासाठी एक सेवेकरी पालकाच्या रूपात सर्वतोपरी सहकार्य केले जाणार असून येथील उपक्रम चालवण्यासाठी मोठ्या प्रमाणात निधी उपलब्ध करून दिला जाईल', असे आश्वासन राज्याचे कृषीमंत्री आमदार श्री धनंजय मुंडे यांनी दिले.

परळी येथील स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमास ना.मुंडे यांनी नुकतीच सदिच्छा भेट दिली. त्यावेळी आयोजित छोटेखानी कार्यक्रमात आ.श्री मुंडे बोलत होते. आश्रम संस्थेच्या वतीने मंत्री श्री उग्रसेन राठौर, वयोवृद्ध वानप्रस्थी श्री सोममुनिजी व आचार्य सत्येंद्रजी यांच्या हस्ते त्यांचा सत्कार करण्यात आला.यावेळी बोलताना ना.श्री मुंडे यांनी आर्य समाज परळीच्या ७५ वर्षांच्या कार्यांचा गौरव करून गेल्या २७ वर्षांपासून चालवण्यात येणाऱ्या या गुरुकुल आश्रमाच्या सर्व उपक्रमांचे कौतुक केले.

ते म्हणाले- 'सध्याच्या मानवनिर्मित जाती-पंथाच्या व्यवस्थेत माणसाला माणूस म्हणून जगण्याची ऊर्जा प्रदान करणारे आर्य समाज हे एक मोलाचे विचारपीठ आहे. जुन्या पिढीतील आर्य समाजी कार्यकर्त्यांनी जीवाचे रान करीत या संस्थेचा काळापालट केला व पुढील पिढी हे कार्य उत्साहाने करीत आहे, हे पाहून मनस्वी आनंद होतो. या

महत्कार्यात एक लोकप्रतिनिधी या नात्याने माझ्याकडून या गुरुकुल आश्रमातील सर्व सोयी - सुविधा उपलब्ध करून देण्यासाठी अथक प्रयत्न केले जातील व आगामी काही वर्षात या पवित्र स्थळाला राज्यातील वेद,संस्कृत विद्येचे ज्ञानक्षेत्र तर अद्ययावत संसाधनांनी परिपूर्ण असे निसर्गोपचार केंद्र बनवले जाईल', असे आश्वासन त्यांनी दिले.

याच कार्यक्रमात गुरुकुलाचे आचार्य श्री सत्येंद्रजी यांचा निसर्गोपचारविद्येत पारंगत व तज्ज्ञ चिकित्सक झाल्याबद्दल ना.श्री मुंडे यांचा हस्ते सत्कार करण्यात आला. याप्रसंगी आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी आपल्या मागण्याची निवेदन सादर केले. तेव्हा श्री मुंडे यांनी लागलीच संबंधित अधिकाऱ्यांना बोलावून सुयोग्य प्रकारे नियोजन करून कार्य पूर्णत्वास नेण्याच्या सूचना दिल्या. यावेळी उपस्थित कृषी उत्पन्न बाजार समितीचे सभापती श्री सूर्यभान मुंडे यांचाही सत्कार करण्यात आला. त्यानंतर आ.श्री मुंडे यांनी गुरुकुलातील सर्व उपक्रमांची पाहणी केली.

प्रारंभी गुरुकुल परिसरात त्यांचे आगमन होताच स्वागत केले गेले. यावेळी आर्य समाजाचे मंत्री श्री उग्रसेन राठौर, उपप्रधान लक्ष्मणराव आर्य, डॉ. मधुसूदन काळे, उपमंत्री जयपाल लाहोटी, पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष देविदासराव कावरे , पुस्तकाध्यक्ष अरुण चव्हाण, सदस्य गोवर्धन चाटे, रंगनाथ तिवार, डॉ. विश्वास भायेकर, डॉ.वीरेंद्र शास्त्री, सुरेंद्र कावरे, शैलेश दोडिया, राजेश दाड, प्रा.जगदीश कावरे,उदय तिवार, यज्ञप्रकाश हुलगुंडे, वैजनाथ मुंडे,उमेश तिवार व गुरुकुलातील सर्व सदस्य उपस्थित होते. प्रास्ताविक श्री लक्ष्मण आर्य गुरुजी यांनी केले, तर सूत्रसंचालन प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले.

परभणीत प्रधानपदी श्री बिर्ला, मंत्रीपदी डॉ.औंढेकर

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेशी संलग्न असलेल्या परभणी येथील आर्य समाजाच्या कार्यकारिणीची नुकतीच नव्याने निवड करण्यात आली. यात

संरक्षकपदी वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री विजयकुमारजी अग्रवाल यांची, प्रधानपदी श्री बालकिशनजी बिर्ला यांची, मंत्रीपदी डॉ. धनंजयजी औंढेकर यांची तर कोषाध्यक्षपदी श्री मधुकर पांचाळ यांची एकमताने निवड करण्यात आली.

आर्य समाज परभणीच्या सर्व सदस्यांच्या झालेल्या बैठकीत सर्वानुमते ठराव घेऊन एकमताने ही कार्यकारणी निवडण्यात आली. उर्वरित कार्यकारिणीत महिला प्रमुखपदी सौ.लीलावती जगदाळे, उपप्रधानदी बाबुराव आर्य व विजयकुमार गावंडे तर उपमंत्रीपदी सुभाष कुलकर्णी त्याचबरोबर सल्लागारपदी भगवान गिरी, मूलचंद शर्मा व प्रचार प्रसार व प्रसिद्धी प्रमुख म्हणून रोहित जगदाळे यांची निवड करण्यात आली आहे. या कार्यकारिणीचा कालावधी आगामी २०२६ पर्यंत राहील. या नूतन कार्यकारणीचे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने अभिनंदन केले असून त्यांना यशस्वीपणे कार्य करण्यासाठी सभेचे प्रधान श्री योगमुनीजी, मंत्री राजेंद्र दिवे व इतर पदाधिकाऱ्यांनी शुभेच्छा दिल्या आहेत.

सुभाषितरसास्वाद...!

सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलं अर्थः।
अर्थस्य मूलं राज्यं राजस्य मूलम् इन्द्रियजयः।।

अर्थ– सुखाचे मूळ हे धार्मिकता व धर्म कार्यात, धर्माचे मूळ धनात, धनाचे मूळ राज्यसत्तेत तर राज्याचे मूळ हे इंद्रियावर विजय मिळविण्यात असते.

म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी आयोजन बैठक

महाराष्ट्र, मुंबई एवं विदर्भ इन तीन आर्य प्रतिनिधि सभाओं की संयुक्त बैठक में मुख्य अतिथि श्री महेशभाई बेलानी का स्वागत करते हुए आर्य समाज पिंपरी के संरक्षक श्री मुरलीधरजी सुंदरानी एवं प्रस्तावना रखते हुए महाराष्ट्र सभा के मंत्री श्री राजेंद्र दिवे..!

राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर, लातूर - समापन

सभाद्वारा आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के पुरोहित शिविर में सम्मिलित शिविरार्थी..!

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि ! || ओ३म् || जीवेत् शरदः शतम्!

औराद शहाजानी (जि.लातूर) स्थित आर्य समाज के आधारस्तम्भ,
शारदोपासक शिक्षण संस्था के नवनिर्माण में योगदान देनेवाले,
सामाजिक, शैक्षिक कार्यकर्ता एवं कर्तव्यदक्ष अध्यापक
पू.पिताजी स्व.श्री.गणपतरावजी बिटोबा निरमनाळे गुरुजी
की पावन स्मृति में तथा आदर्श शिक्षिका एवं सामाजिक कार्यकर्त्री
पू.माताजी श्रीमती सीनाताई गणपतरावजी निरमनाळे
के गौरव में समस्त निरमनाळे (जाधव) परिवार की ओर से
'वैदिक गर्जना मासिक' का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट